# स्मृति - सन्दर्भः

श्रीमन्मद्वर्षिप्रणीत धर्मशास्त्रसंग्रहम्न्थः कपिलादिवशस्त्रत्यात्मकः

#### पञ्चमोभागः



कारा प्रकाशक ११ ए/यू. ए., जबाहर नगर, दिल्ली-७

#### श्रीगणेशाय नमः।

## अथ स्मृतिसन्दर्भस्थ पञ्चमभागे सङ्कालित-स्मृतीनां नामनिदेशः

	स्पृतिनामानि			<b>रहानु</b> ।
88	कपिछस्पृतिः	***	***	3545
8ई	वाधूलस्मृतिः	***	***	<b>२</b> ६२३
80	विश्वामित्रस्मृतिः	***	498	रहेश्वर
88	<b>छोहितस्</b> तिः	***	***	2008
38	नारायणस्यृतिः	***	***	2000
40	शाण्डित्यस्मृतिः	***	***	२७६३
48	कण्वस्मृतिः	150	***	२८६०
42	दालभ्यस्मृतिः	* 4 #		₹₹3₽
६३	आक्रिरसस्पृतिः नं०	٧	***	
	(क) " पूर्वादि	<b>रसम्</b>	***	3835
	(ख) " उत्तरा	क्लिरसम्	**4	३०६४
88	भारद्वाजस्मृतिः	***	***	ROCK

विशेष द्र०—द्वितीयाङ्गिरसस्मृतेर्विषयवैशिष्ट्येनपृथगुपन्यासः

# स्मृतिसन्दर्भ पञ्चम भाग

की

# विषय-सूची

### कपिलस्मृति के प्रधान विषय

<del>ज</del>ध्याय

प्रधान विषय

TELE

कपिल-शौनक-सम्बादवर्णनम्

३४३६

कपिछ एवं शौनक में परस्पर देव विषयक चर्चा। यहीं देव निन्दकों का प्रकरण भी खाया है (१-२०)। वैदिककर्मणामभावकथनम्

वैदिक कर्मी का अभाव कथन (२१-४०)/।

वेदमन्त्राणां व्यत्यासेनोश्वारणेदोषकयनम्

२४३४

वेदमन्त्रों के ज्यत्यास से ज्यारण करने में दोष होना (४१-४०)।

भाइप्रकरणवर्णनम्

२४३४

भाद्ध प्रकरण का वर्णन, नान्दीमुख भाद्ध की प्रधा-नता, विभिन्न माद्धों का मुन्दर वर्णन (५१-३००)।

अध्याय	प्रधान विषय	<u>यशस्त्र</u>
उपनयनसं	स्कारवर्णनम्	<b>२४४७</b>
उपनयन र	संस्कार का वर्णन (३०१-३३३)	1
त्राक्षणादिवर्णान	ामेकपङ्कौभोजननिर्णयवर्णन <b>ः</b>	म् २५५६
त्राह्मणादि वर्णन ( ३३४	वर्णों का एक पक्कि में भे —३५०)।	ोजननिर्णय
विप्रमहत्त्ववर्णन	¥.	२४६१
विप्रों के	महस्व का वर्णन ( ३५१—३५८	) 1
नान्दीश्राद्धप्रक	रणवर्णनम्	२५६३
नान्दी श	माद्ध करनेवाले की योग्यता व	अधिकार
का वर्णन (	3次を348)1	
दत्तकपुत्रप्रकरण	वर्णनम्	२५६४
दत्तकपुत्र	का वर्णन और उसकी योग्यता	(३७४-४२६)।
दानप्रकरणवर्ण	नम्	२५६६
	दानों का निरूपण ( ४२७-४७६)	। दान के
अधिकारी :	बनों का वर्णन (४७७-४८७)।	
दौहित्रप्राधान्य		<b>२५७५</b>
	ही सर्वत्र प्रधानसा का निरूपण (	1 (004-228
भूमिदानप्रकरप	गवर्णनम्	<b>२४७७</b>
भूमिदान	न प्रकरण ( ५०१—५१८ )।	

			_
31	ध्य	T	स
		*	-

प्रधान विषय

विधार्

वर्जितस्त्रीणां श्राद्धपाककरणे दोषवर्णनम् २५७६ वर्जित क्षियों को श्राद्ध का पाक करने में दोष बतलाया है (५१६—५४०)।

विधवास्त्रीणां कृत्यवर्णनम्

२४८१

विधवा खियों के कार्यों का वर्णन ( ५४१-५६२ )।

सधवाविधवास्त्रीणां मीमांसा

२५८५

सधवा एवं विधवा खियों का विवेचन (५६३-६३२)।

विधवास्त्रीणां प्रकरणम्

3589

अतिरण्डा, महारण्डा और पुत्ररण्डा आदि का वर्णन (६३३-६४६)।

पुत्रमहत्त्ववर्णनम्

१३४६

पुत्र के विना एक क्षण भी न रहे। पुत्र के महत्त्व का विस्तार से निरूपण ( ६४६-६७८ )।

ज्येष्ठपुत्रस्य पैत्र्ये योग्यता

२४६३

ज्येष्ठ पुत्र की पिता के सभी उत्तराधिकारियों से अधिक योग्यता (१७६—६६८)।

औरसपुत्रेषु ज्येष्ठत्वनिर्णयः

5888

औरस पुत्रों में ज्येष्ठ कीन हो इसका निर्णय (६६६-७००)।

अध्याय	प्रधान विषय	वृष्टाङ्क
पैत्र्ये कर्मणि दौहि	त्रस्यौरसत्वम्	<b>२४६७</b>
	दौहित्र का पुत्र के अभा	व में औरस
होना ( ७०१		
धर्मसेवनलामः		3348
	<b>लाम ( ७</b> ४५—७६६ ) ।	
सुतस्य कुलतारकत्य	म्	२६०१
पुत्र का कुछत	ारक होना ( ७६७७८६	) [
निर्दृष्टपुत्रयोग्यता		२६०३
निर्दृष्ट पुत्र की	योग्यता ( ७६०—८०६ )	1
दण्ङ्यानामदण्ड्यानां	यथायथभर्मन्यवहरणम्	२६०४
दण्डनीय और	न दण्ड देने योग्य जन	का धर्म से
व्यवहार करना (	(052092	
दण्डविधानम्		२६०७
द्ण्डविधान व	र्णन (८३१—८७१)।	
विप्रसहत्त्ववर्णनस्		२६११
74-104-104-104	व निरूपण (८७२—८६३	) 1
गानाविधदानप्रकरण	ų	२६१३
विविध दानों	का वर्णन (८६४६८०)	1

TEIL:

दुष्कर्मणां प्रायश्चित्तवर्णनम्

२६२१

दुष्कमी का प्रायक्षित्त वर्णन (१८१-१६५)। कपिलस्मृति का माहात्म्य वर्णन (१६६)। कपिलस्मृति की विषय-सूची समाप्त।

### वाधूलस्मृति के प्रधान विषय

नित्यकर्मविधिवर्णनम्

२६२३

महर्षियों ने नाधूछ मुनि से झाझणादि के आचार पूछे इस पर नित्यकर्म निधि का वर्णन उन्होंने किया (१-३)। झाझमुहूर्त्त में शब्या त्याग कर प्रसक्त मन से हाथ-पैर घोकर भगवत्समरण करे (४)। झाझमुहूर्त्त में सोनेवाला सभी कमों में अनाधिकारी रहता है (४)। प्रातः सन्ध्या तारागण के प्रकाश से लेकर सूर्योदय तक है। अतः तारागण के रहते प्रातः सन्ध्या करे (६)। सार्यकाल में आचे सूर्य के अस्त होने के समय सन्ध्या करे (७)। कानों पर यह्नोपवीत रखकर दिन में और सब सन्ध्याओं में उत्तर की तरफ और रात में दक्षिण की ओर मुँह कर टट्टी पेशान करे (८)। सारे अङ्गों

को सिकोड़ कर नाक और मुँह को वस से ढक कर मलमूत्र त्याग करें (६)। जो व्यक्ति अपने शिर को विना ढंके मलमूत्र का त्याग करता है उसके शिर के सौ दुकड़े हों ऐसा वेद शाप देते हैं (१०)। बाद में शोधन कर्म करे। गृहस्थ, ब्रह्मचारी, यानप्रस्थ और सन्यासियों का विभिन्न शौच प्रकार (११-१७)। वाह्य और आभ्यत्तर शौच आवश्यक है क्योंकि शौच व भाचार से हीन की सब क्रिया निष्फल हैं (१८-२०)। आचमन प्रकार-ब्राह्मण इतना आचमन ले जितना हृद्य तक स्पर्श हो, अन्त्रिय, वैश्य, शूद्र और शियां कण्ठतालु तक स्पर्श करनेवाले जल से आचमन करे। हाथ में कुश डेकर जल पीवे और आचमन करे। (२२-२७)। अपने कटि प्रदेश तक जल में सान कर वहीं भीरो कपड़ों से तर्पण, आचमन और जप करे यदि सूखे कपड़े पहनकर करना हो तो सक में ये कियायें करें (२८-३०) उपवास के दिन दन्तधावनादि न करे । कुला के समय तर्जनी से मुख के शोधन से प्रायश्चित्त खगता है।

स्तानविधिवर्णनम्

२६२७

निषिद्ध तिथियों में दन्तधावन नहीं करना चाहिये। पतित मनुष्य की द्वाया पड़ने से झान करना चाहिये असृश्य के छू जाने से १३ वार जड़ में नहाने से शुद्धि हो। रजखला स्त्री को यदि ज्वर चढ़ जावे तो वह कैसे शुद्ध हो इसके उत्तर में वापूछ ने बताया कि चतुर्थ दिन दूसरी स्त्री उसे स्पर्श कर दश या बारह बार आखमन कर अपने पहलेबाले कपड़ों को छोड़कर नये कपड़े पहन हे फिर पुण्याहवाचन के साथ यथाशकि दान करे (३१-४८)। भूमि पर गिरा हुआ जल गंगा के समान पवित्र है। चन्द्र और सूर्य प्रहण के समय कुआ, वापी, तड़ाग के जल शुद्ध हैं। अपनी शीच किया से निर्वृत्त होकर झान करे दोनों हायों को मिला कर जल की अञ्चलि से जल में तर्पण करे जिस तीर्य से जल लिया जाय उसीसे जलाञ्जलि देवे (४६-५६)। पूर्व की ओर मुख करके देवतागण को, उत्तराभिमुख होकर अधियों को और दक्षिण की ओर मुँह करके जल में पितरों को तर्पण करे। सान के लिये जाते हुए मनुष्य के पीछे पितरों के साथ देवगण व्यास से व्याकुछ जल के लिये लालायित होकर बायुरूप होकर जाते हैं अतः देवर्षिपितृतर्पण किये विना वस्त्र को न निचोड़े यदि वस निचोड़ा जाता है तो वे निराश होकर वले जाते हैं। सम्पूर्ण कमों की सिद्धि के लिये नदी, ताळाब, पहाड़ी मरनों में प्रतिदिन सान करे (५७-६३)।

दूसरे के बनाये हुए सरोवर में जान करने से उस बनानेवाछे के दुष्कृत (पाप) आनार्थी को लगते हैं अतः उसमें न नहावे (६४)। सोकर उठने से लार-पसीनों से मरा हुआ मनुष्य अग्रुद्ध है उसे स्नानादि से गुद्ध होनेपर ही नित्यकर्म सन्ध्योपासन देविष पितृ वर्षण करना चाहिये। सूर्योदय के पूर्व प्रातःकाछ का स्नान प्राजापत्य यक्ष के समान हैं और आलस्यादि को नष्ट कर मनुष्य को उभव विचार और कार्यशीछ बना देता है। स्नान के समय पहने वस्न से शरीर को न यले न पोंछे ही इससे शरीर कुले के द्वारा सूंचा हुआ हो जाता है जो फिर स्नान करने से ही गुद्ध होता है (६१-६८)।

स्तान मूळाः कियाः सर्वाः सन्ध्योपासनमेव च । स्तानाचारविद्दीनस्य सर्वाः स्युः निष्फळाः कियाः ॥६७॥

सम्पूर्ण कियायें स्नान के अन्तर्गत ही हैं। रविवार को उपा काल में स्नान करने से हजार माघ स्नान का फल और जन्म दिन के नक्षत्र में वैधृत पुण्यकाल, व्यतीपात और संकान्ति पर्यों में, अमाक्स्या को नदी में स्नान कोटि कुलों का खद्वार कर देता है। प्रातः स्नान करनेवाले को नरक के दुःख कभी नहीं देखने ji):

पड़ते। स्नान किये बिना भोजन करनेवाला मल का मोजन करता है ( ६६-७५ )।

शिव सङ्कल्प सूक्त का पाठ, मार्जन, अधमर्षण, देवर्षि पितृ तर्पण ये रनान के पाँच श्रङ्ग हैं (७६-७७)। जल के अवगाहन, जल में अपने शरीर का अभिषेक, जल को प्रणाम और जल में तीथों गङ्गादि नदियों का अवगहन फिर मल्जन, अधमर्पण, देवर्षि पितृतर्पण का विधान बतलाया गया है (७८-८६)। प्रातः स्नान का महस्व। अपने शरीर को पोंछने पर सूखे कपड़े पहनकर उत्तरीय धारण करे। बन्दन और तर्पण के समय इसे कि प्रदेश में ही बाबे रक्खे। फिर तिलक्ष करे। पर्वत की चोटी से, नदी के किनारे से, विशेष रूप से विष्णु क्षेत्र में मिली सिन्धु के तट पर तुलसी के मूल की मिट्टी से तिलक प्रशस्त बताया गया है (६०-१०८)।

श्वामितिलक शान्तिकर लाल वश में करनेवाला, पीला लक्ष्मी देनेवाला और सफेद मोभदाता बतलाया है (१०६-११०)। भगवान पर चढ़ाये गये हरिद्रा के चूर्ण के तिलक का माहात्म्य (१११) सम्पूर्ण संसार में जो कर्महीन द्विजाति भाग्न हैं उनको शुद्ध करने के लिये सन्ध्या स्वयं महा। ने बनाई।

प्रातःकाळ गायत्री का ध्यान, मध्याह में सावित्री

धीर सार्व काल सरस्ती का क्यान करना चाहिये। प्रतिमह, अन्नदोष, पातक और उपपातकों से गायत्री मन्त्र के जपनेवाले की गायत्री रक्षा करती है इसल्यि इसका नाम गायत्री है।

> प्रतिब्रहाद्वसदोषात्पातकादुपपातकान् । गायत्री प्रोच्यते यस्माद् गायन्तं त्रायते यतः ॥११५॥

सविता को प्रकाशित करने से इसका नाम सावित्री और संसार की प्रसिवत्री वाणी रूप से होने से इसका इसका नाम सरखती अन्वर्थ है (जैसा नाम वैसा गुण) (११२-११६)।

आपोहिप्टेत्यादि मार्जन मन्त्रों में नौ ओडूतर के साथ जो मार्जन किया जाता है उससे वाणी, मन और शरीर के नवों दोधों का क्षय हो जाता है (११७-१२०)। सायंकाल में अर्घ्य जल में न देवे जहां सन्ध्या की जाय वहीं जप भी हो। वेदोदित नित्यकर्मों का किसी कारण आतिकमण हो जाय तो एक दिन विना अन्न खाये रहना चाहिये और १०८ गायशी मन्त्र के जप दोनों सन्ध्या में विशेष रूप करे (११-१२६)।

स्तक और मृतक के आशीच में भी सन्ध्या कर्म न कोड़े प्राणायाम को छोड़ कर सारे मन्त्रों को मन से ख्यारण करे (१३०-१३२)। देवार्चन, जप, होम, खाध्याय, ज्ञान, दान तथा ध्यान में तीन-तीन प्राणायाम करे (१३३-१३४)। जप का विधान प्रातः काल हाय ठंने रखकर, सार्यकाल नीने हाथ कः एवं मध्याह में हाथ खौर कन्मे के पीन में रखकर जप करे नीने हाय कर जप करना पैशान, हाथ बीन में रखकर करने से राक्षस, हाथ बांधकर करने से मान्धर्व और उपर हाथ करने से दैवत जप होता है (१३४-१३६)।

प्रदक्षिणा, प्रणाम, पूजा, हवन, जप और गुरु तथा देवता के दर्शन में गले में वस्त्र न लगावे (१४०)। दर्मा के विमा सन्ध्या, जल के बिमा दान और विना संख्या किया हुआ जप सब निष्फल होता है। जप में तुलसी काष्ठ की माला और पद्माध्य तथा क्ट्राक्ष की माला प्रशस्त है (१४१-१४३)। गृहस्थ एवं ब्रह्मचारी १०८ वार मन्त्र का जाप करे। वानप्रस्थ तथा यति १००८ वार करें। खाहुति के लिये सामग्री का विधान (१४४-४६)।

गृहस्थधर्मवर्णनम्

२६३७

गृहस्थ को सम्पूर्ण कार्य पक्षी सहित इष्ट है। जिस मनुष्य की स्त्री दूर हो, पतित हो गई हो, रजखळा हो, स्रविष्ट वा प्रतिकृत हो उसकी अनुपस्थिति में कोई

त्रहृषि कुशमयी धर्मपत्नी, कोई शृधि काश की बनी पत्नी को प्रतिनिधि रूप में रखकर नित्यकर्म किया करने की सद्गृहस्य को आज्ञा देते हैं (१४७-४८)। होम के लिये गो पृत श्रेष्ठ वह न मिले तो माहिए पृत उसके न मिलने पर बकरी का घृत और उन सब के न मिलने पर साक्षात् तैळ का व्यवहार करे (१८६)। समय पर आहुति देने का माहास्म्य (१५०-१५२)। वेदाक्षरों को स्वार्थ में लानेवाले मनुष्य की निन्दा। है प्रकार के वेट्रॉ को देचनेवाछे का गणन (१५३-१५८)। रविवार, शुक्रवार, मन्वादि चारों युगों में और सध्याह्न के बाद तुलसी न छादे। संकान्ति, दोनों पक्षों के अन्त में द्वादशी में और राजितवा दिन की सम्ब्या में तुलसी चयन का निषेध है (१६०)। दीर्घ में मन, वाणी और कर्म से कैसा भी पाप न करे और दान न हेवे क्योंकि वह सब दुर्जर है अतः अक्षम्य है। ऋत ( व्यवहार ) अमृत सत्य कर्तव्य पालन ऋत या प्रमृत से और सत्य-अनृत से जीविका कमावे (१६१-६३)।

किसी वस्तु को बिना पृछे लेने से पाप (१६४)। मनुजी ने वनस्पति, कन्द, मूळ फल, आग्निहोन्न के लिये काठ, कुण और गीओं के लिये चास ये अस्तेय बताये हैं। किन-किन छोगों से किसी भी रूप में कोई वस्तु न हैवें

इसका वर्णन (१६६-१६८)। दूसरे के लिये तिल का हयन करनेवाले दूसरे के लिये मन्त्र जप करनेवाले और अपने माता पिना की सेवा न करनेवाले को देखते ही आंख बन्द कर ले (१६६)। जो लोग निन्दा कर्म करते हैं उनके सङ्ग से सन्पुरुष भी हीन हो जाते हैं और उनकी शुद्धि आवश्यक है (१७०-१७४)। जो आदेश, तीन या चार देद के महाविद्वान दें बही धर्म है और कोई हजारों स्यक्ति चाहे, कहे वह धर्म सम्मत नहीं। वेद पाठी सदा पश्चमहायज्ञ करनेवाले और अपनी इन्द्रियों को वश में करनेवाले मनुष्य तीन लोकों को तार देते हैं (१७५-१७६)।

पतित छोगों से सम्पर्क करने से मनुष्य यक वर्ष में पतित हो जाता है (१८०)। किछ्युग में सभी ब्रह्म का प्रतिपादन करेंगे परन्तु कोई भी वेद विहित कर्मों का अनुष्ठान नहीं करेगा (१८१)। मैथून में त्याज्य दिनों की गणना—अष्टी अष्टमी, एकादशी, द्वादशी, खतुर्दशी, दोनों पर्व अमाबास्या, पूर्णिमा, संक्रान्ति कोई भी ब्राद्ध दिन, जन्म नक्षत्र का दिन, अवण ब्रत का समय और जो भी विशेष महत्त्वपूर्ण दिन हैं उनमें भैयुन (क्षी गमन) निषद्ध है (१८२-१८३)। शुम समय से अर्थार्थी मनुष्य जिन कामों को अपने स्वार्थ के छिये

करता है उन्हें ही यदि धर्म के लिये करे तो संमार में कोई दु:स्वी नहीं रह सकता।

अर्थार्थी यानि कर्माणि करोति कृपणो जनः। तान्येव यदि धर्मार्थं कुर्वन् को दुःस्वभागभदेत्।।१८६॥ भिन्न-भिन्न वस्तुओं एवं पतितों के छू जाने से सान का विधान किसी वस्तु को वेचने पर स्नान का विधान आवश्यक है (१८४-१८८)।

श्रुति स्मृति के आदेश श्रमु की आक्षा है इनको न माननेवाले को भगवद्गक बनने का अधिकार नहीं (१८६)। सम्रे अन्ये का लक्षण—जो श्रुति स्मृति का अध्ययन, मनन और अनुशीलन कर उनके मार्ग का अनुष्ठान नहीं करता वह अन्धा है (१६०-१६१)। पापी को धर्मशास अच्छे नहीं लगते (१६२)।

सवा बाह्यण वही है जो कृण करने से ऐसे हरता है जैसे असे सर्व को देखकर। सम्मान से ऐसे दूर रहता है जैसे छोग भरने से और क्षियों के सम्पर्क से जैसे मृतक से छूणा होती है वैसे दूर रहता है। ब्राह्मण वह है जो शान्त हो, दान्त हो, कोध को जीतनेवाला हो, आत्मा पर पूरा अधिकार करनेवाला हो, इन्द्रियों का निमह कर चुका हो। बाह्यण का यह शरीर अपभोग के लिये नहीं विक इस शरीर में क्लेश के साथ सपस्या करते हुए

उद्धं होक में अनन्त सुख की प्राप्ति के लिये हैं (१६३-१६४)। दर्श में सुखे कपड़े पहनकर तिलोदक जह के बाहर दे, गीले वस्तों से पितर निराश होकर जले जाते हैं। उद्धं पुण्डू का माहात्म्य (१६५-२०१)। श्राद्ध के बाद ब्राह्मण भोजन का विधान (२०२)। विवाह में, श्राद्धादि में नान्दी श्राद्ध करने से, सूतक का दोष नहीं रहता (२०३)।

पितृ आद्ध में वर्जित छोगों को देवता कार्य में बुलाने की छूट (२०६-२०६)। पितृ आद्ध में क्झों के देने का माहत्स्य (२०७)। अलग-अलग कमानेवाले पुत्रों द्वारा पृथक्-पृथक् पितृ आद्ध का विधान (२०८-२१०)। सन्यासी बहुत खानेवाला, वैद्य, नामधारी साधु, गर्मवाला, (जिसकी छी गर्भवती हो) वेदों के आचरण से हीन व्यक्ति को दान और आद्ध में न बुलावे (२११)।

गर्भ करनेवाले द्विज के लिये वर्ज्य कर्म (२११-२१७)। स्नान, सन्ध्या, जप, होम, स्वाध्याय, पितृ तर्पण, देव-ताराधन और वैश्वदेव को न करनेवाला पतित होता है अतः इन्हें नियम से करना प्रत्येक द्विजाति का कर्तव्य है (२१८-२२४)।

।। बाधूलस्पृति की विषय-सूची समाप्त ।।

### विश्वामित्रस्पृति के प्रधान विषय

अध्यास

प्रधान विपय

पृष्ठाङ्क

१ नित्यनमित्तिककर्मणां वर्णनम्

२६४४

मङ्गलाचरण (१) ब्राह्ममुहूर्त, उप:काल, अरुणोद्य और प्रातःकाल के मान का वर्णन (३)। नित्य और नैमित्तिक तथा काम्य कर्म समय पर करने से सक्तल देते हैं (४) ब्राह्ममुहूर्त में शाँच से निवृत्त होकर अरु-णोद्य के पहले आत्मा के लिये झान करे प्रातः जप करे और सूर्य को देखकर उपस्थान करे (६)। काल वीदने पर कोई कर्म करने से फल नहीं मिलता यदि किसी कारण से काल का लोप हो गया तो तीन हजार जप करने से उसका प्रायक्षित विधान है। दुःसङ्ग या निद्रा अयवा प्रसाद आलस्य से काल का लोप करने से प्रायक्षित वतलाया गया है (८-१४)। जो ज्यक्ति समय पर नित्यकर्मादि को करता है वह सम्पूर्ण लोगों पर जय पाकर अस्त में विष्णुपुर में जाता है (१६)।

प्रातः स्नान सन्ध्या और जप अवश्य कर्म है। जैसे समय पर वर्षा होते ही बीज बोने से अच्छी खेती होती है वैसे ही नियुक्त कर्मों को नियुक्त समय पर करने से सद्यः सिद्धि मिछती है (१०-२१)। इसम, मध्यम और

अधम मत्थ्या के भेद । शुचि या अशुचि हो, नित्यकर्म को कभी न छोड़े (२२-२४)। तीनों सन्ध्या काल में या तो पूर्व की ओर या उत्तर की ओर मुँह कर नित्यकर्म करे। दक्षिण या पश्चिम की और मुँह करके नहीं (२६)। सत्थ्या आन किये बिना विशा पढ़ना हानिकारक है, सन्च्या काल आने पर इसे छोड्नेवाले को पाप लगता है (३०)। सोपाधि एवं अनुपाधि भेद से खाचार के दो भेद-सोपाधि गुणवान् और अनुपाधि मुख्य है ( ३१-२६ )। गायत्री मन्त्र की विशेषता---प्रासः शध्या-त्याग के बाद पृथ्वी का बन्दम भैरव की स्तुति, दक्षिण दिशा में जाकर मल-मृत्र आदि का त्याग करे (३२)। शौच का प्रकार ( ५३-५६ )। दन्तधावन और द्तुवन के लिये चनस्पतियों का परिगणन ( ६३ )। आचमन कर स्तान करने का प्रकार (६८)। सन्ध्यादि, तर्पण का विधान (७३)।

जलकान का विधान मन्त्रीश्वारण पूर्वक विशेष फल-दायक है। तीनों कालों में झान का विशेष विधान (७८)। सान करनेवाले पुरूष के रूप, तेज, बल, शीच, आयु, आरोग्य, अलोलुपता, एवं तप की धृद्धि व दु:खप्न का नारा होता है। तर्पण की विशेषता (८७)। बल-धारण में वस्त्रों के महत्त्व का वर्णन, प्राणायाम का अध्याय

प्रधान विषय

गुष्टाष्ट

प्रकार, पूरक, कुम्भक और रेचक से सम्पूर्ण प्रकार के मलदोगों का नाश होकर शारीर की शुद्धि होती है और अध्यात्मवल बढ़ता है। तिलक धारण की विधि, पुण्डू घारण इसके विना सब कमें निष्फल (१०४)।

२ आचमनविधिवर्णनम्

२६५७

मुख्य तीन प्रकार के आचमनों का वर्णन, पौराण, स्मार्त और आगम, इनके साथ और एवं मानस आच-मनों का वर्णन—मन्त्र जपने एवं नित्यकर्मों के आदि और अन्त में आचमन करे। भगवान् के २१ नामों के साथ न्याम विधान (१-२०)।

२ विधिवदाचमनस्यैवफलवर्णनम्

र६५१

गोकर्ण की आकृति बनाकर अंगूठे और सबसे छोटी अङ्गुळी को छोड़कर अञ्चलि में जलप्रहण कर आचमन का विधान है इसी का फल है (२१-२३)। थूकने, सोने, ओड़ने, अश्रुपात आदि से विझ होने पर आच-मन करे या दक्षिण कान को तीन बार स्पर्श करे। भोजन के आदि में और अन्त में नित्य आचमन करे। मानसिक आधमन में भी केशवाय नमः, माधवाय नमः और गोविन्दाय नमः मन में बोलकर चित्र शुद्धिकरे (२४-३२)। प्रधान विषय

ERIE

#### २ मार्जनम्

2640

"आपीहिन्ना नयी भुषः" से मार्जन करे फिर न्यासं करे, ऐसा करने से दिजमात्र शुद्ध होकर व्यान, जफ पूजा में सब सिद्धियां प्राप्त करते हैं (३३-३६)।

### २ पश्चासमानविधिवर्णनम्

2668

अक्षयम् में तीम बाद आव्यमन का विधान है। और, सार्क, आव्यमन की किन-मिन संखी पर करना इसकी विभि (४०-६७)।

## ३ प्राणायामचिधिवर्णनम्

२६६३

क्षपूजाविधिवर्णनम्

रद्दश

विक्रोममायनी मन्त्रवर्णनम्

२६६७

नानामन्त्ररणां जये तत्तरमञ्जेण प्रापायामः २६६८

प्राण और अपन का संबंधन होता ही प्राणाधाम कहतासा है, इसे साध्याकात और प्रश्चेन को के जारम्भ में अन की एकाफ क्रिके के हिन्द अव्यक्त करें। नी बार उसक प्राणाधाधा, है कर कन्नल और तीम बार अपने कहा गांग तथा हैं (१-३)। गांधनी काम और ज्याहरियों के साथ प्राणाधाम करना बाहिके

(४-५)। पहले कुम्भक फिर पूरक और फिर रेचक, इस क्रम से प्राणायाम करना इष्ट है। सन्ध्या होस काल और ऋस्थज में अन्भक से आरम्भ कर प्राप्तायाम करे । प्राणायाम में करने योगाध्यान का वर्णन (६-१०)। द्श प्रणव एवं गायत्री मन्त्र के साथ इडा और पिक्रला को छोड़ सुधुम्ना नाड़ी से कुम्भक करे साथ में मन्त्र का स्मरण बराबर होता रहे (११)। रेचक और पूरक विना प्रयास के होते हैं। कुम्भक में प्रयास करना होता है यह अध्यास से शहय है। अनध्यास से शास विष का काम करते हैं, अध्यास से वही अमृत वन जाते हैं। प्राणायाम के समय सिद्धासन से बंठे। प्राणायाम में चारों अङ्गुळी और अंगूठा काम में हेना पाहिये। इस समय मन्त्र के उबारण के साथ-साथ उस-उस देवता की मानसर पूजा करनी चाहिये इससे विशेष फल मिलता है।

छं, हं, यं, रं, वं इन बीजों से पृथिक्यात्मा को गत्थ, आकाशात्मा को पुष्प, वाय्वात्मा को धूप, अग्न्यात्मा को दीप और अमृतात्मा को नैवेद्य प्रदान करे इस पश्च-मृतात्मक मानसी पूजा से ही प्राणायाम की मिद्धि मिस्रनी है (१२-२६)। प्राणायाम का अभ्यास सिद्धासन, कुम्भक के नाथ और मन्द्र दृष्टि के रूप में आंग्वें यन्द्र करने से शीव सिद्धि शाप्त होती है। प्राणायाम में मानसी पूजा का माहात्म्य (३०-३६)। प्राणायाम के चिना सब निष्फल है। चिलोम भायबी मन्त्र का वर्णन (३७-४६)। इससे सम्पूर्ण पाप, रोग, दरिद्रता दूर होते हैं (४७)।

विलोम गायत्री मन्त्र के जाप का फल सम्पूर्ण मनः वाणी और कम से किये गये पापों का नाश होना चताया है (४८-४६)। प्राणायाम न करनेवाला अव-कीणीं होता है उसे प्रायधित लगता है (५०-५२)। विशेष जिन-जिन मन्त्रों का विधान आता है उनके साथ भी पुरक, कुम्भक और रेचक क्रम से प्राणायाम करने का विकल्प है। चार्जाक, शंब, साणेश, सीर, बैणाव और शाक्त जो भी मन्त्र है उन-उन से प्राणायाम की विधि फल देनेवाली है। भिस-भिन्न विधियों मे प्रगणा-याम की १०, १६, २०, २४, १३, १४ और १६ चार आदृत्ति करने की विधि हैं। वैधदेव में १० वार आदि में १० बार अन्त में प्राणायाम करने का विधान हैं। जहां सङ्कलप है वहां २ वार और सभी काम्य आहि कर्मों मे १८-१० धार आवृत्ति का विधान है। विलो-माक्षरों से गायत्री का प्राणायाम अनस्त कोटि गुणित फल देता है ( ५३-७६ )।

8

मार्जनम्

र६७१

शिर से पैर तक "आपोहिद्यादि" मन्त्र से मार्जन का फल। अर्घ मन्त्र और पूर्ण मन्त्र मार्जन दो प्रकार का है (१-५)। ऋग्यातुः माम वेद की शाखावालों का मार्जन कम। आपोहिद्यादि के मन्त्र में प्रणव का उचारण करते हुए शिर पर मार्जन करे और "यस्यक्ष-याय जिन्ध्य से नीचे की और जल प्रसेप करे (६-१८)। शिर से भूमि तथा पादान्त मार्जन से अश्वमेध यह का फल मिलता है। मार्जन की फलशुनि(१६-२०)।

### सार्घ्यदानगायत्रीमाहात्म्यवर्णनम्

२६७४

सन्ध्यावन्दन के समय प्रातः और सायं तीन-तीन अर्घ्य सूर्य को दे, मध्याह काल की सन्ध्या में केवल एक ही। तीन अर्घ्य में एक देत्यों के शक्ताख नाश के लिये, दूसरा बाहन नाश के लिये और तीसरा असुरों के नाश के लिये और अन्तिम प्रायश्चित्तार्ध देकर पृथ्वी की प्रदक्षिणा से सब पापों से छुटकारा हो जाता है। गायत्री के पञ्चाङ्क का वर्णन (१-२४)।

४ प्रायश्चित्तार्ध्यविधिवर्णनम् नामागवर्षविनियोग्यानवर्णनम्

२६७७

२६ उह

क्षध्याय

ľ

प्रधान विषय

रुषाङ्क

प्रायश्चित्तार्घ्यं की विधि का वर्षन—नाना सन्त्रों के विनियोग एवं ध्यान का वर्षन (२५-४४।

६ द्विविधजपलक्षणम्

२६८१

नैमितिक पर्व कान्य दो प्रकार के जपों के स्थाप यह सन्ध्याङ्ग के रूप में नदीसीर, सरित्कोष्ट और पर्वत की चोटी पर एकान्त वास में ही अधिक फस देनेवाला है (१-२)।

मृत्यमन्त्र से भूशुद्धि, फिर भूतशुद्धि, फिर रक्षाके लिये दिग्यन्थन करना और गायत्री के न्यास का वर्णन (३४-३०)।

६ कराङ्गन्यासक्र्णनम्

२६८४

दश बार मन्त्र का जप कर हृदय को हाथ से स्पर्श कर प्राणास्क जये फिर प्राणासाय करे (३१-३२)। अनुकोम एवं विकोस कम से करन्यास एवं हृद्यादि-न्यास एवं दिशाओं का बन्धन करे।

६ मुद्राविधिवर्णनम्

२६८७

आबाहन आदि के भेद से १० प्रकार की सुद्राओं का वर्णन, गायबी जब के आरम्भ की २४ सुद्रा (३३-७१) ।

७ उपस्थानविधिवर्णन्यु

२६६०

सम्ब्बाकाळ में स्योपश्वास का महस्य (१-२०)।

अ	<u>ष्याय</u>	प्रधान विषय	<i>মূহ। ই</i>
6	देवयज्ञादिविधान	<b>नवर्णनम्</b>	२६६२
	<b>बैधदेवकालनिर्ण</b>	यवर्णनम्	२६६४
	पश्चस्नापनुस्यर्थ	वैश्वदेखवर्णनम्	२६६७
	वैश्वदेवमाहातम्य	र्ग्यन्म	२६६६

वैश्वदेव में कोद्रव (कोदो ), मसूर, उड़द, लवण और कड़वे द्रव्यों को काम में न लेवे (१-२)। नाना प्रकार की बिछ करने से नाना प्रकार के काम्य कर्मों की सिद्धियां होती हैं। द्विजों के लिये पौव ही केम से बिल का विधान है। पहले डपबीत, दूसरे निवीत, शीसरे पित्रमेब के लिये बिल की जाती है (३-१२)।

वैश्वदेव में ताजा अफ ही काम में लिया जाय (१३-१६)। वैश्वदेव मन्त्र के साथ हो या वि'ाा मन्त्र के हरों किसी भी रूप में करना चाहिये; क्योंकि इसकी करनेवाला असदोध से लिपायमान नहीं होता (१७ २४)। पश्चशूनाजनित पापों को जैसे, चूल्हा, चक्की, जल मरने का स्थान, काह आदि के दोधों को दूर करने के लिये इसकी बड़ी आवश्यकता है (२४-३६)।

वैश्वदेव को करने से सकल दोषों का निवारण होता है। नित्य होम का बजन सृतक एवं मृतक में बताया

#### [ Rk ]

सया है। बश्चदेव के काल का वणन । वैश्वदेव माहात्म्य वर्णन (४०-८३)।

॥ विश्वामित्रस्मृति की विषय-सृची समाप्त ॥

### लोहितस्मृति के प्रधान विषय

अध्याय

प्रधान विषय

वृष्टाहरू

विवाहायौ स्मातंकर्मविधानवर्णनम्

२७०१

विवाहाप्रिमें स्मार्त कमों का वर्णन । जिस की के साथ सर्वप्रथम गाईन्ध्य सन्थन्ध जुड़ता है वह धर्मपत्नी है। उसके विवाह के समय की अग्नि का ही सभी कार्यों में उपयोग इप्ट है (१-११)। अन्य भार्याओं की अग्नि गौण है उनमें वेदोक्त एवं तन्त्रोक्त प्रयोग नहीं होना चाहिये। यदि उन्हें काम में भी लें तो अमन्त्रक ही प्रयोग होना चाहिये (१२-१६)।

सभी स्मार्त कर्म, स्थालीपाक, श्राद्ध, या जो भी नैमित्तिक हो वह सारा प्रथम धर्मपत्नी की अपि में ही हो। (२०-२६)।

अनेकाग्निसंसर्गः

२७०४

पृसर्ग्य अग्नियों का एकत्र संसर्ग का विधिपूर्वक

विधान (३०)। यदि मोह से दूसरी पत्नियों की आग्नि में यागादि का विधान किया जाय तो वह निष्कल होता है (३१-३६)। इसके लिये फिर से मुख्य अग्नि की स्थापना कर फिर विधान करना लिखा है (३७)। यदि धर्मपत्नी कहीं बाहर चली जाय तो वह अग्नि लीकिक हो जाती है। अतः प्रातः सायंकाल के नित्य हचन में धर्मपत्नी का स्थस्थित रहना स्थावश्यक है (३८-४२)। सीमान्तर जाने पर उस अग्नि का फिर सन्धान (स्थापना) करना चाहिये।

### ज्येष्टादिपत्नीनांतत्सुतानांजैष्ट्यकानिष्टयविचारः २७०५

सभी कार्यों में धर्मपत्नी की ज्येष्ठता मानी गई है भले ही दूसरी पत्नियां अवस्था में कितनी ही वड़ी क्यों न हों (४३-४६)। इसी प्रकार धर्मपत्नी से उत्पन्न पुत्र ही क्यांदि करने में ज्येष्ठता प्राप्त करेंगे क्योंकि दूसरी, हीसरी सादि से उत्पन्न पुत्र को कामज है (४६-६२)। अपुत्राक्षा दलकविधानवर्णसम्

वसपुत्र की जासबुत के सकाब क्षेत्रकासका एवं सम्पत्ति क्षा अधिकार ( १२-१४)। जिसके युत्र म हों कर्ने अधी पुत्र के किये प्रस्ताब करमेवाले की प्रशंसा (१११-५६)। विकास पुत्र क्षक क्षिक काम वसे समाज



î

के प्रमुख व्यक्तियों के सामने इह, माई-वन्धुओं की बुलाकर बिना पुत्र के माता को विधि-विधान से देना चाहिये। जो पुत्र समाज के गोत्र कुछ में से दत्तकरूप में किया जाय बास्तब में वह अपने पुत्र तुल्य है और अपुत्रक माता-पिता के लिये सर्वथा दैवपैत्र्य कार्य के लिये प्राह्म है। उस पुत्र का औरस पुत्रों के समान ही सारा अधिकार होता है (६०-७१)।

यदि दसक पुत्र होने के बाद उन माता-पिता के सन्तान हो जाब तो वह चतुर्थ मान का खामी होने का अधिकार रखता है (७२-७४)। अब आदि धर्मपत्नी के न रहने च पुत्र न होने पर दूसरी पत्नी से जो पुत्र होना वही उथेष्ठत्व का अधिकारी होना और अवशिष्ट खियों की सन्तान कामज रहेगी (७५-८५)।

आत्मध सन्तान की ही औरसता कही गई है (८६-८७)। यदि कोई धर्मपत्नी के सन्तान न हुई उसमें पति की इच्छा से इसक युत्र किया और संयोगवश किर सन्तान हो गई तो इसक पुत्र को ज्येष्ठ पुत्र के रूप में बराधर अग्न मिलेगा। यदि इसकपुत्र और औरस पुत्र उपस्थित हो तो औरस युत्र को ही विता-माता के और्थ्वदेहिक कर्म करने का अधिकार है (८६-६८)। अध्याय

प्रधान विषय

प्रशाञ्च

धर्मपत्न्याः गृह्याविकृत्ये प्रावल्यम्

२७१०

ज्येष्ठ पत्नी का ही सम्पूर्ण मृद्ध अग्नि एवं पाक यहादि में अधिकार एवं नित्य, नैमित्तिक तथा काम्य सभी कमी में उसी की प्रधानता है (१६-१०४)। मुख्य मृद्धाप्ति के कार्य धर्मपत्नी के अधीन हैं। उत्तः वह कार्यविशेष उपस्थित हुए दिना कोई भी रूप में सीमोहक्कन न करे अन्यथा मृद्ध अग्नि छौकिक अग्नि हो जायगी और अग्नि की स्थापना फिर से करनी होगी (१०५-१०६)। किसी कोटी नदी को भी यदि मोह से पार कर लिया तो फिर नई प्रतिम्ना अग्नि सन्धान के लिये करनी होगी (११०-११४)।

यदि ज्येष्ठ पनी कारण विशेष से उपस्थित न हो सके वाहर गई हुई हो तो द्वितीयादि अग्नि से श्राद्धादि विधि सम्पादित हो सकती है, परन्तु उसमें कोई भी विधि समन्त्रक नहीं हो सकती सभी अग्नन्त्रक करनी चाहिये (११६-१२६)। पूर्व पत्नी के न रहने से गृह्यामि की स्थापना के लिये जब दूसरा विचाह किया जाय तो पहले के घड़े से तूनन विचाहित क्षी के घट में अग्नि की स्थापना की जाय (१३०-१३६)। अग्नि उसी समय अष्ट हो जाती है, जब पनी चित्रत्र से दूयित हो (१३६-१४०)।

यदि द्वितीयाग्नि से वेद प्रतिपादित कर्म किये जांय तो ये फलदायक नहीं होते (१४१-१४२)। अतः पूर्व पन्नो की गृह्याग्नि को दूसरे विवाह के वर्नन में स्थापित कर धमपन्नीवत् सारे काम किये जांय (१५३-१५५)। यदि किसी दुश्चरित्र माता के दूषित होने से पूर्व पति से सन्तान हुई हो तो वह सारे वैदिक कार्यों के करने का अधिकार रखती है, परन्तु दुश्चरित्र होने के बादवाली सन्तान किसी भी रूप में प्राह्म नहीं (१५६-१५७)। कलियुग में पांच कर्मों का निष्ध—

अश्वास्त्रम्भ, गवासम्भ, एक के रहते हुए दृसरी भावां का पाणिवहण, देवर से पुत्रोत्पत्ति एवं विधवा का गर्भ धारण (१५८-१६६)।

#### <mark>द्वादश</mark>विधपुत्राः

२७१७

क्षेत्रज, गृहज, व्यभिचारज, बन्धु, अवन्धु और कानीनज आदि १२ प्रकार के पुत्रों के भेद (१७०-१८६)। दत्तक पुत्र होने और देने में भाता-पिता ही एक मात्र अधिकार रखते हैं दूसरे नहीं १८७-२०८)।

पुत्रसंग्रहावश्यकता

२७२१

पुत्र संप्रहण की आवश्यकता (२२०)।

अध्याय

प्रधान विषय

पृष्ठाङ्क

दौहित्रे सति पुत्रप्रतिग्रहाभावः

२७२२

दौहित्र होने पर पुत्रप्रतिष्ठह नहीं करना, वयोंकि दौहित्र होने से अजात पुत्र भी पुत्र ही है (२२१-२२४)। किसी के सम्मिछित परिवार में अविभक्त धन के भागीदार की सृत्यु हुई यदि उसके पुत्री है और पुत्र नहीं है तो दौहित्र ही पुत्र के समान सभी कायों को करने व कराने का अधिकारी है (२२५-२२८)। जो हुझ धन अपुत्रक का है इसका सारा दायित्य इस मृतक की सड़की के पुत्र का है (२२६-२३०)।

परघनापद्दारकाणां दण्डविधानवर्णनम् २७२

जो व्यक्ति किसी भी प्रकार से दूसरे के द्रव्य को अपहरण करने की अनिधिकार चेष्टा करे उसे राजा स्वयं कहा दण्ड दे और उसे अपने देश से बाहर निका-छने का आदेश है (१३१-२३४)।

जो व्यक्ति धर्मसङ्गत राज्य की प्रतिष्ठा में पूर्व सहयोग हैं बन्हें रक्षापूर्वक रखना चाहिये (२३६-२४१)

### **पुत्रत्वस्याधिकारितावर्णमम्**

२७२४

दीहित की पुत्रप्रहण की सोग्यतः (२४२)। अपने इष्ट परिचार साता-पिदा, श्रेष्ट पुरुष व्यादि की आज्ञा



से अपुता विधवा सी इसक है (२४३-२४४)। जो निकट सम्बन्धी दो वा दो से अधिक सन्तानकाला हो उसका कोई-सा भी पुत्र अपने लिये इसक लिया जा सकता है (२४६)। यदि कोई-सा भी लूला, लक्ष्या, गूंगा, बहरा, जन्धा, काना, नपुंसक या कुछ का दांगी हो तो उसे लेना न लेना बराबर है (२४०)। वदि ऐसे निकलाक इसक लिये गये तो मन्त्र किया आदि का लोप हो जाता है (२४८-२६२)। यदि सभाज के सभी प्रतिधित व्यक्ति एवं परिवाह के आई-यन्यु जिसके लिये जाता है तो नह इसक सफल होता है (२५३-२५७)।

अपुत्रक का दसक हैंगा दीहिक क उत्पक्त हो तम तक प्रामाणिक है बरद में यदि दौहिक पैक्ष हो अपन तो वह अप्रामाणिक है।

मनु ने दौहियों में नई होटे में किसी एस को ठेने का विधान बताया है (२६८-२६३)। हो। ३ या ६, ६ पुत्रों में सबसे ज्येष्ठ और सबसे कनिष्ठ को छोड़ किसी एस को लिया जा सकता है (२६४-२६६)। यदि मोह से ज्येष्ठ को एसक ठे सिया गया तो मोछी विवाह विधि के बाद वह अपने सने मिता का ही पुत्र होने का अधिकारी है नृसंदे का नहीं (२६७)। ऐसा देशक अध्याय

प्रधान विषय

प्रयाद्ध

पुत्र हैनेवाहे के किसी काम का नहीं (२७०)। कई सियों के एक पति से पुत्र हो तो ज्येष्ट और कनिष्ठ को छोड़ अन्य लिये जा सकते हैं (२७३)।

एकपुत्रस्य स्वीकरणनिषेधः

२७२७

एक पुत्र यदि विना खीवाने के हो और विधवा सी उसे दत्तक है उसका निर्पेध (२७४-२८५)।

विधवास्वीकृतपुत्रदण्डम्

२७२८

तो कोई सुता और दौहित्र को निरम्कार कर अन्य को इनक है उसपर गाजाविशेष विधान से इण्ड लागू करे ((२६०-२६६))

दौहित्रप्रशंसा

२७२8

दौहित्र की प्रशंसा ( २६७-३२३ )। दौहित्रचेविष्यम्—

एक तन्मानामह गोत्री, दूसरा साहित्र और सीसरा निर्देख

नियाह में कन्याप्रदान के समय भातामह एवं पिता की प्रतिक्षा के अनुसार होनेवाले सम्यन्थ से उत्पन्न सन्तान कमराः तरमातामह गोत्री और दौहित्र हैं तीसरा निर्दोष तालगोत्री है। अध्याय

प्रधान विषय

विद्याङ्क

पौहित की आदादि कर्ममें धोतिय ब्राह्मण से ज्येष्ठता (३३६-३४८)।

श्रत्याञ्चिकाकरणे प्रत्यवायः

२७३४

प्रतिवर्ष के आद्ध को न करने से प्रत्यवाय होता है, अतः जल, तण्डुल, उड़द, मृग, दो शाक, पत्र, दक्षिणा, पात्र और आझण ये दश शाद्ध में उपयोग करने की वस्तुएं हैं, एक का लोग भी वाञ्छनीय नहीं। यदि आपत्काल हो तो उसके लिये अनुकल्प का विधान है (३४६-३६३)।

श्राद्धद्रन्यामावेऽन<u>ु</u>कल्पः

२७३४

घृत के दुर्लभ होने से तैल उसका प्रतिनिधि आज्य जसके अभाव में दूध और उसके न मिलने पर दही यदि ये भी न मिलें तो पिष्ट के जल से मिला कर होमकर्मा-दिक करे। या फिर प्राप्त मधु से सब काम सिद्ध करे, किसी भी रूप में फल, पश्र और सुद्रव्य आदि से श्राद्ध का कार्य किया जाय।

इनके अभाव में आपोशानादिक कियायें जल से और अन्न से सम्पादन कर पिण्ड प्रदान करे और जल में विसर्जित करे अविशिष्ट को काम में लें फिर दूसरे दिन तर्पण करें।

#### प्रधान विषय

पुष्ठाकु

आयश्रास्त के इस विधान को शान्ति के समय काम में न है। गुद्ध अने का प्रयोग जो अपनी अच्छी कमाई से छाया गया ही विहित है; सद्व्य के द्वारा ही आदं करने का विधान उसका पाक भी आदकर्ता की की द्वारा गुद्धता से फिया हुआ होना चाहिये। भाव-गुद्ध, विधिशुद्ध और द्व्यशुद्ध पाक ही आदं में अव्हा है (३६४-४०६)।

#### श्राद्धे पाककर्तारः

3505

धर्मपद्धी, कुलपत्नी की क्या में विकाहित हो। पुप्रवाती हो। मासावें सम्बन्धियों की खिया, मूखा, बहिन, भार्या, साक्षु, मानी, भाई की खिया, गुरुपत्निया और इनके म मिलने कर सर्व आह में पाक करनेकार की मसस् कहा है (१८०७-४२०)।

रण्डायस्थ और बन्ध्यस्थास गर्सित वसकाया है (४९१)। हां कुल की कोई ऐसी खिया करनेवाली न हो तो उप-र्युत्त संभी माताओं से पाककिया सम्पन्न हो संभती है (४९२-४२६)।

मृतकार्ये कर्तुरतुक्षस्पनिर्वेशः

3802

सर्थ के छिये ही मृतकार्थ के औं क्वेंद्धिक कार्य का



अध्याय

प्रधान विषय

वुष्टाङ्

कर्तावृतस्थाधिकारः

२७४२

अतदृत (अनिधिकार) कर्म अफ़त कर्म के समान है (४३१-४४४)।

विधवानां निन्दा

२७४३

विधवाओं को स्वतन्त्र रहने से निन्दित कहा है अतः पतिगृह या पितृगृह में ही रहना आवश्यक है (४४५-४७२)।

रण्डाया अस्त्रातन्त्र्यम्

२७४६

रण्डा की सम्पत्ति का अधिकार, वह उसके बेचने आदि की अधिकारिणी नहीं (४७३-४८२)। कई रण्डाओं के भेद (४८३-४६३)।

विवाहात्परतः सीणामस्वातन्त्र्यवर्णनम् २७४६

विवाह के बाद सियों की अखतन्त्रता का वर्णन (४६६-५०६)। शास्त्रहि से धर्मपासन का महत्त्व (५०६-५२६)। पुत्र के अभाव में इत्तक का विधान वर्णन (५२७-५७६)। समीचीन रण्डा का वर्णन (५०७-६०८)।

उत्तमदण्डव्यवस्थावर्णनम्

3405

वत्तमदण्डव्यवस्था का वर्णन ( ६०६-६४० )।

अध्याय

प्रधान विपय

व्याङ

29

सुवासिनीनां शिरःस्नाननिष्धः

२७६१

इरिद्रास्नानविधिः

सुवासिनी कियों को प्रहण, रजीदर्शन, मङ्गल कार्य, चण्डालस्पर्श एवं यज्ञ के आदि व अन्त इत्यादि कार्यो में शीर्यस्नान कहा दैतथा इरिद्रा के चूर्ण को जल में प्रक्षेप कर स्नानविधि कही है ( ६४१-६४७ )।

पतित्रताधर्माः

२७६२

पति की सेवा बड़े से बड़ा धर्म ( ६५३-६७० )। दुराचाररतां रण्डां दृष्ट्वा प्रायश्चित्तवर्णनम् । २७६५ दुष्ट चरित्र युक्त रण्डाओं के देखने से प्रायश्चित का विधान कहा है ( ६७१-६८६ )।

नानादण्ड्यकर्मसु दण्डविधानवर्णनम् र७६७ नानादण्ड्य कमी में दण्डविधान का वर्णन (६८७-७०६)। नयप्राप्तराज्ये सर्वेषां सुखित्ववर्णनम् नयप्राप्त राज्य में सभी के सुखी रहने का वर्णन ( ७१०-७२१ )।

॥ लोहितस्पृति की विषय-सूची समाप्त ॥

# नारायणस्मृति के प्रधान विषय

STE	याय प्रधान विषय	<b>हैं हैं</b>
۶	नारायणदुर्वाससीः सम्बादः	२७७०
	नारायण दुर्वासा का सम्बाद (१—६)।	
	महापातकोपपातकवर्णनम्	२७७१
	महापातक और उपपातकों का वर्णन ( ०१	<b>(4)</b> (
	प्रतिग्रहपापप्रायिक्तित्तवर्णनम्	२७७३
	प्रतिग्रहजनित पाप के प्रायश्चित्त का वर्णन (१६	-8१) ।
2	बुद्धिकृताभ्यासकृतपापानां प्रायक्ष्वित्तवर्णना	प् २७७४
	बुद्धिकृत और अभ्यासकृत पापों के प्रायश्चि	स्त का
	थर्णन (१-७)।	
Ę	नानाविधदुष्कृतिनिस्तारोपायवर्णनम्	रख्य
	नाना प्रकार के पापों के निक्तार का उपाय (१	1(38-
8	प्रायदिचसवर्णनम्	२७७७
	प्रायधित्तों का वर्णन (१-११)।	
ų	दुष्प्रतिग्रहादिप्रायक्ष्यिचवर्णनम्	३७७६
	पाप समाचार की शति का वर्णन (१-	1(35
	पापादि को दूर करने के लिये सहस्र कलशस्था	पन का
	विधान (३०-६६)।	

सध्याय

प्रधान विषय

विद्या

६ सहस्रकलगानिपंकः

२७८४

सहस्र कल्शों से अभिषेक कर वर्णन (१-७)।

७ कलौ नौयात्राद्यष्टकर्मणां निपंधः

२७८४

किंद्युग में विधवा का पुनः इद्वाहः नाव से यात्रा, मधुपर्क में पशु का वध, शूट्रालमीजिता, सब वर्णी में भिक्षा मांगला, आहाणों के बरों में शूद्र की पाचनकिया, मृग्वमिपतन वर्जित है (१-५)। वेन के पास ऋषियों का अनुरोधपूर्ण आवेदन (६-३३)।

८ अष्टनिपिद्धकर्मणां श्रायिक्चित्तवर्णनम् २

धनाड्य व्यक्तियों को आठ निपिद्ध कर्मों के करने से सहस्र कलशस्तान, पञ्चवारूण होस, गायत्री पुरश्चरण, महादान और सहस्र ब्राह्मण भोजन इत्यादि प्राय-श्चित बतलाये हैं (१-१४)।

**१ धन**हीनाय प्रायक्ष्यित्तवर्णनम्

१ उध्न

घनहीन के लिये प्रायक्षित्त का विधान—वह शिखा सिंदत मुण्डित हो पुण्यनीर्थ में, या तालाव में, आकण्ठ जल में मन्न हो अधमर्पण जाप करें (१-१३)। ॥ श्री नारायणस्मृति की संक्षित्र विषय सूची समान्न॥

## शाण्डिल्यस्मृति के प्रधान विषय

अध्याय

प्रधान विषय

वृद्धाङ्क

१ आचारवर्णनम्

२७६३

आचार के विषय में मुनियों का शाण्डिल्य से प्रश्नी-सर (१-१२)।

दिविधादेह**ञुद्धिवर्णनम्** 

२७६५

दो प्रकार की देह शुद्धि का शर्णन। दूसरे की निन्दा पारुष्य, विवाद, क्रूठ, निजपूजा का वर्णन, अतिवन्ध प्रलय, असहा एवं समें बचन, आक्षेप वचन, असन् शास्त्र एवं दुष्टों के साथ संभाषण इत्यादि दुर्गुणों को त्याग कर स्वाप्याय, जप में रत, मोक्ष एवं धर्म के कार्य में निरन्तर उगना प्रिय बोलना, सत्य एवं परहितकारी सचनों का उद्यारण करना ऐसी बहुत-सी शुद्धियों का धर्णन। शिर, कण्ड आंख और नासिका के मल को दूर करना यही सर्वाङ्गीणा शुद्धि बतलाई है (१८-३६)।

ज्ञानकर्मभ्यां हरिरेवोपास्य इतिवर्णनम् २७६७

धर्मकी हानि नहीं करनी चाहिये, संब्रह ही करे। धर्म एवं अधर्म सुख व दुःख के कारण हैं। यही सना-सन धर्म शास्त्र है अन्य सव आमक हैं तथा ताअस व राजस है, यही सास्त्रिक है। वेद, पुराण एवं उपनिषदों

3305

भें "इदं हेयमिदं हेयमुपादेयभिदं परम्" यही अतलाया है। साक्षात्परब्रह्म देवकी पुत्र श्री कृष्ण की आराधना सर्वोत्तम है। देव, मनुष्य और पशु आदि का विम्तार उन्हों से है।

> साक्षाद्वश्य परं धाम सर्वकारणमध्ययम्। देवकीपुत्र एवान्ये सर्वे तत्कार्यकारिणः॥ देवा मनुष्याः परावो मृगपक्षिसरीख्नुपाः। सर्वमेतजगद्धानुर्वामुदेवस्य विस्तृतिः॥

कान एवं कर्म से भगवान् की ही आरम्धना सर्वो-सम है। यही कान है, वही सत्कर्म है एवं यही सच्छास्त्र है। जो भगवान् के चरणारविन्दों की सेवा नहीं करते हैं वे शोचनीय हैं (४०-५६)।

सात्विकराजसतामसगुणानां वर्णनम्

प्रकृति त्रिगुणात्मका है एवं जगन् की कारणभूता है। सम्पूर्ण संसार देव, असुर और मनुष्य इमी के विकार है। इस प्रकार सास्त्रिक राजस और तामस गुणों का संक्षेप से वर्णन (६०-७०)।

देश शुद्धिका वर्णन-जहां म्हेन्छ पापण्डी न होधार्मिक सवा भगवद्गक्तिपरायण मनुष्य रहते हों और हिंसक जन्तुओं से शून्य हो वह स्थान शुद्ध है (७१-८२।)

पृष्ठाङ्क

### भगवन्पूजनिवधिवर्णनम्

२८०१

मात प्रकार की शुद्धि कर भगवत्यू जग्परायण होना चाहिये। प्रथम शरीर को तथन्यादि से शुद्ध करे अग्रक्त हो तो दान करे और दोनों में ही असमर्थ हो तो नामसंकीर्नन करना चाहिये (८३-६५)। उपचास, दान, भगवद्भकों के सेवन, संकीर्तन, जप, तप और श्रद्धा द्वारा शुद्धि होती है (६६-१०१)।

पराविद्याद्वाप्त्यर्थमधिकारिगुरुद्धिष्यवर्णनम् २८०३ विद्या की प्राप्ति के डिये आचार्य का वरण और अधिकारी शिष्य का वर्णन (१०२-१५२)।

सन, वाणी और कर्म से भी शिष्य अपने गुरु का अहित न विचार कभी उनके सामने प्रमाद न करे किसी भी प्रकार की उद्धिप्तता उत्पन्न करनेवाले भाव, विचार, इन्छा व कर्मों को न करे। शिष्य मृद्ध पाप-रत, कूर, वेदशाखों के विरोधी छोगों की सक्षति न करे इससे भक्ति में विझ होता है (११३-१२२)।

## २ प्रातःकृत्यवर्णनम्

२८०५

श्रृषिओं का प्रानः कृत्य के चिषय में प्रश्न और महर्षि शाण्डिल्य द्वारा स्नान सन्ध्या आदि को क्षेकर विम्तार से प्रातः काल के कर्तव्यों का वर्णन। शब्या को छोड़ने के बाद सर्व प्रथम भगवान गोविन्द के दिव्य नामों का सक्कोर्चन करते हुए यका और दण्डाद कमण्डल लेकर अपने भस्तक पर कपड़ा बांध कर मल-मूत्र त्याम करने के लिये गांव के बाहर जावे। पेशाय, मैधुन, स्नान, भोजन, दन्तधावन, यझ और सामृद्धिक हवन में मौन धारण करने की विधि है। यझोपबीत को दाहिने कान पर टांग कर मल-मूत्र का त्याग करना चाहिये (१-६)। मलमूल करने में जो स्थान वर्जित हैं उनका परिगणन (१०-१२)।

सल-मूत्र स्याग के समय, देवता, शत्रु, शिष्य, कामि, गुरु, कृद्ध पुरुष और ली के न देखे। अधिक समय तक मल-मूत्र न करे केवल आकाश, दिशा, तारा, गृह और अमेष्य वस्तुओं को देखे (१३-१४)। मिट्टी से गुदा और लिक्न को जल से धोवे। फिर हाथ धोकर दन्तधावन करे। सान के लिये तीर्थ, समुद्रादि, तालाव, कूप और भरने का जल विशेष प्रयोजनीय है (१४-२०)। जल को अल्लों से अधिक न पीटे न जल में कुद्धा किया जाय और देह का मल भी जल में न खोड़ा जाय फिर वाहर आकर सन्ध्या कर्म के लिये स्थान को धोवे और कपड़े वदले (२१-२८)। सान प्रकरण के साथ नित्य कुत्यों का वर्णन (२८-६१)।

पृष्ठा 🕷

### ३ उपादानविधिवर्णनम्

२८१३

द्वितीयकाल में करने योग्य भगवत्युजन आदि का वर्णन। भक्तिका लाभ जो श्रद्धालु एवं अयवर्ग के सुख को जाननेवाले हैं उन्हें ही मिलता है (१-४६)।

वाह्य और आभयन्तर शुद्धियों का वर्णन। भोजन को अग्निदेव के समर्पण करने का वर्णन (५०-६०)। पाक में निषद्ध वृक्षों का इन्धन जलाने के लिये परिगणन (६१-१०८)। निषिद्ध और महण योग्य वस्तुओं का वर्णन (१०६-१२०)।

श्राह्म और निषिद्ध पय का वर्णन (१२१-१३६)। भोजन यनाने में कुराल सती श्री एवं निषिद्ध कियों के लक्षण (१३६-१६०)।

स्त्री के साथ सद्ज्यवहार का वर्णन (१४१-१५८)। इस प्रकार भगवलीत्यर्थ उपादानों का उपयोग कर गृहस्य सुखी होता है (१५८-१६३)।

## ४ इज्याचारवर्णनम्

२८२६

एक देव की पूजा ही इष्ट है, भगदद्गिक विषयक नियमों का विस्तार से वर्णन । भागवतों की सदा पूजा करनी चाहिये । विष्णुभक्त गृहस्थों के कमी का वर्णन भगवत्पूजा प्रकार, सञ्झाखों के अवण पठन का महत्त्व

#### [ 88 ]

अध्याय प्रधान विषय पृष्ठाङ्क वर्णन, योगविधि का वर्णन, उपवास की प्रशंसा (१-२४२)।

### रात्रावन्त्ययामे योगकृत्यवर्णनम्

२८५१

भगवन्युजा करने का विधान। योगधर्म का वर्णन। भगवद्गक के शीलाचार का निरूपण सभी कर्मों को भगवद्गपण बुद्धि से करनेवाले मनुष्य का जनम सफल होता है। शास्त्र की प्रशंसा (१८१)।

॥ शाण्डिल्यस्मृति की विषय-सूची समाप्त ॥

## कण्वरमृति के प्रधान विषय

धर्मसारवर्णनम् २८६० धर्मकर्नन्यवर्णनम् २८६१ नित्यक्रित्यवर्णनम् २८६५ प्रातःसमग्णे कीन्यांनां वर्णनम् २८६७ पाने भक्षणेच शब्देकुने प्रायश्चित्तवर्णनम् २८६६ युगभेद से ब्रह्मवेत्ता आदि शृषियों ने कण्य ऋषि से समानन धर्मों के विषय में पृक्षा (१-५)। कण्य द्वारा धर्मभार का निरूपण

घर्मकर्त्तव्यवर्णन-जिस व्यक्ति की बुद्धि ऐसी है कि किया, कर्ता, कार्यिता, कारण और उसका फल सब कुछ हरि है वही स्थिर बुद्धि का है, उसका जीवन सफल है (६-१०)। परमेश्वरप्रीत्यर्थ किया हुआ कर्म ही सफल है। सत्सङ्खल्प एवं उसका फल (११-६१)। नित्य-निमित्तिक कर्मों का फल निर्णय (४-५०)। नित्यकृत्य का वर्णन (५१-७४)। प्रात-काल में स्मरण करने योग्य कीत्य महानुभावों का वर्णन (७५-८०)।

प्रातः शौचस्नानादि कियाओं का वर्णन (८१-६४)।
गण्डूप के समय शब्द का निषेध और उसका प्रायधित्त
का वर्णन (६४-६७)। मक्षण एवं स्माने के समय भी
शब्द करने का निषेध (६८-१०४)। मूत्र पुरीषोत्सर्ग
में गण्डूप के बाद आचमन का विधान (१०५-११६)।
गृहस्थों का मृत्तिका शौच का विधान (११७-१२६)।
गुहस्थों में सर्वत्र आचमन का विधान (१२७-१४०)।
नित्यकर्मी में उल्ट-फेर करने से फल नहीं होता है
(१४१-१६०)।

क्षान के समय आवश्यक कृत्य जैसे सत्थ्या, अर्च्य, गायश्री मन्त्र का जप देवर्षिपितृतर्पण, क्षानाङ्गतर्पण अवश्य करने चाहिये (१५१ १५८)। कण्ठकान, कटिस्नान, पादस्तान, कापिल स्नान, प्रोक्षणस्नान स्नान-स्नान एवं शुद्ध वस्न धारण करने का विधान, जैसा शरीर सन्ने वैसा करे (१४६-१६०)।

भायव्य स्नान का अन्य स्तानों से श्रेप्टन्य वर्णन (१६१-१६७)। सन्ध्याओं का विधान (१६८-१७०)। साथ ही गायत्री अप का माहात्म्य (१७१-१६८)। सन्ध्या ही सब का मृह्य है (१६६-२०६)। गायत्री मन्त्र का वैशिष्ट्य वर्णन (२०७-२२३)। वेद पठन का अधिकार गायत्री से ही शक्य है (२२३-२२८)।

सम्यद्भकार गायत्री जप का फल वर्णन (२२६-२४१)। सन्ध्याः गायत्री और वेदाध्ययन का फल कव नहीं सिलता (२४२२४६)। किल में गायत्री मन्त्र का प्राधान्य (२६०-२६६)। मूक ब्राह्मण का वेदादि व वैदिक कर्मों के करने में योग्यता का वर्णन (२७०-२८०)। वैदिक कृत्य की सब में प्रधानता (२८१-३००)। ब्रह्मार्पण युद्धि से ही सब कर्मों का अनुष्ठान इष्ट है (३०१-३२६)।

एक कार्य के अनुष्ठान में कार्यान्तर (दूसरा काम) वर्जित है ( ३२६-३२७)। उपासना का महत्त्व ( ३२८-३३४)। गार्हपत्य अमिकी स्थापना और इसके उपयोग का प्रधान विषय

पुष्ठाङ्क

थर्णन (३४०-३४६)। नित्य होम एवं **अग्नि के उप-**स्थान का विधान (३५०-३५०)।

पश्चपाक न करने की अवस्था में विकल्प का विधान (३६१-३७१)। पश्चमहायज्ञों का निरूपण (३७२-३८३)। ब्रह्मवेदाध्ययन में अधिकारी होने का वर्णन (३८४-३६४)। ब्रह्मज्ञान की एक साधना का उपा-सनाकम प्रयोग (३६४-४१४)। अग्निहोत्र, दर्शावि एवं आग्रयण, सौत्रामणि और पितृयज्ञों का निरूपण (४१४-४२६)।

वेदों के अनभ्यास से मानव-चरित्र का सांस्कृतिक विकास सदा के लिये हक जाने से राष्ट्र की अवनति होती है (४२०-४३३)। चित्तशुद्धि के लिये वेदोक्त मार्ग ही भ्रेयस्कर है (४३४-४३७)। चार पितृ कर्मों का वर्णन, उन्हें ययाशक्ति करने का आदेश (४३८-४४३)। विविध ऋणों से हुटकारा पाने का प्रकार (४४४-४६८)।

वैदिक कमों की तुलना में अन्य कार्यों का गौणत्व वर्णन एवं दिक्य भाषा की योग्यता (४६६-४००)। नित्यनैमित्तिक कमों में विष्णु का आराधन वर्णन (४०८ ४८१)। दौर्माद्दाण्य से मनुष्य सदा दूर रहे (४८३-४८८)। अग्निष्टोम और अतिराधों का अनुष्टान श्रेयस्कर है, सप्तसोम संस्था के पाकयक्षों का विधान (४८६-४६४)। इन अनुष्टानों को न करने से प्रत्य-वायिक होगों का निरूपण (४६६-४६७)।

महाचारी के नित्यकृत्यों का वर्णन (४६८-५०२। जातकर्म, चौल, प्राज्ञापत्य, उपाकर्म आदि का विधान (५०३-५१३)। भिन्न-भिन्न अनुवाकों का वर्णन (५१४-५२६)। नाना काण्डों का वर्णन (५१६-५३७)। महाचारी वेदलतों का सम्पादन कर विधिपूर्वक स्नातक-धर्म में दीक्षित हो (५३८-५४६)। गृहस्थ में प्रवेश के लिये लक्षणवती की से विवाह और उमके साथ वैदिक विधि से गृहप्रवेश व अभिहोत्र का विधान (५४०-५४६)। गुप्ति होम का विधान (५४६-५४८)। औपासन कृत्यों का वर्णन (५४६-५४४)। गृहस्थ के लिये नित्य कर्तव्य विधि का धर्णन (५४६-५४३)। फिर इष्ट कर्तव्य एवं अनिष्ट कर्तव्यों का परिगणन (५५४-५६२)।

प्रातःकाल से मायंकाल तक के कर्तव्यों का निर्देश (१६३-१७३)। गृहस्थ भगवान सहमीनारायण का ध्यान सदेव करे। गृहस्थ को आनेवाले सभी सम्मान्य गुरुजन अनिथि एवं विशिष्ट जनों की पूजा का विधान (१७४-१६०)। उपयुक्त पाकों का विधान और उनके करनेवाले सी पुरुषों का वर्णन (१६१-६०१)। पंक्ति-

वर्ज्य भोजन में दोप वर्णन (६०२-६०५)। गृहस्थ के लिये पठनीय एवं करणीय विधान (६०६-६१३)। कन्द्रमूल फल जो भक्ष्य हैं उनका विधान (६१४-६१६)। यहाँ का बहाजान के समान फल वर्णन (६२० ६३६ )। शेयहोस के विधान का वर्णन ( ६३७-६४६ )। ब्राह्मणादि का प्जन (६५७-६७७)। पुत्रविवाह से पुत्री विदाह की विशेषता! सुपात्र में कत्यादान पुत्र से सौ गुणा अधिक बताया है ( ६७८-७०० )। गोत्रपरि-वर्तन के सम्बन्ध में नाना मत ( ७०१-७२२ )। वंश के उद्धार के लिये दत्तक पुत्र का विधान (७२३-७४३)। दत्तक में दौहित्र की योग्यता (७४४-७५५)। श्राद्वकृत्य में निर्दिष्ट का अन्य कृत्य नियोजन में निषेच (७५६-७८६)। एक काल में बहुत से श्राद्ध आने पर कृत्यों का सम्पा-इन प्रकार (७८६-७८८)। ब्रह्मवेदी ब्राष्ट्रण का साहात्स्य ( ७८१-७६२ )। कण्वस्मृति का फल वर्णन ।

।। कण्वसमृति की विषय-सूची समाप्त।।

# दालभ्यस्मृति के प्रधान विषय

**अ**ध्याय

प्रधान विषय

विष्ठान्त

दारम्यम्प्रति ऋषीणां धर्मविषयकः प्रश्नः

2833

पोडशभाद्धवर्णनम्

मह ३५

दारुष से ऋषियों का धर्माधर्म विवेक, मृतशुद्धि, मासशुद्धि, श्राद्धकालादि के सम्बन्ध में प्रश्न, इष्टापूर्व की लेकर दारुष्य द्वारा विशेष प्रशंसा, पितरों के तर्पण का विधान (१-१६ । १६ श्राद्धों का वर्णन (२०-४१)। श्राद्ध में निपिद्ध कर्मी का परिमणन (४२-५४)। श्राद्ध में भोजन करनेवाले के लिये आठ वस्तुओं का त्याग (५५-५६)। श्राद्धकरण में पुत्र का अधिकार (६०-६७)।

शसहतकानां श्राद्धदिनवर्णनम्

१८४१

नाना सम्बन्धियों के भिन्न-भिन्न दिनों में आद का विधान। शक्ष इतक के आद दिन का वर्णन (१८-७०)। मृतक का आद दिन अविदित हो तो एकादशी को आद किया जाय (७१-८०)।

आम आद के करने का विधान (८१)। पहले माता का आद फिर पितरों का फिर मातामहीं का (८२-८५)। अक्षाचातक का लक्षण, इनके स्पर्श करने से स्नान और भोजन करने से कुन्क्रसान्सपन का विधान। जो चाण्डाली में अकाम से गमन करे इसके लिये सान्सपन एवं दो प्राजापत्य का विधान। सकाम चाण्डाली गमन करनेवाले को चान्द्रायण और दो तप्रकुन्क्र का प्राथित करने का विधान (८६-६६)। गोइत्यावाले के लिये प्रायित्रत का विधान (६७-१०२)। रोध, बन्धन, अतिवाह और अतिदोह का प्रायित्रत विधान (१०३-१०८)। वृषम की हत्या का प्रायित्रत विधान (१०६-११०)।

गोदोहन का नियम—दो महिने बक्ष है को पिछावे ब दो मास दो स्तनों का दोहन करे तथा दो मास एक बक्त शेष सम्प्य में अपनी इच्छा हो वैसे करे।

द्वीमासी पाययेद्धत्सं द्वी मासी द्वीस्तनी दुहेत्। द्वीमासी चैकवेळाया शेवं काळं यथेच्छया ॥१९१॥

किन-किन स्थानों में प्रायश्चित्त नहीं रूगता इसका वर्णन (११२-११३)। किन-किन को प्रायश्चित्त न करने का पाप रूगता है (११४)। आशोच का निर्णय वर्णन (११५-१२१)। किसी हीन से सम्पर्क करने में दोष कहा वै (१२२-१२३)। सूतक और मृतक के आशोध का विधान (१२४-१२६)। क्षभाग

प्रधान विषय

वंद्याङ

## आशौचनिर्णयवर्णनम्

रहक्षर

माल, शिशु एवं कुमार की परिभाषा (१३०)। विवाह, चील और उपनयन में यदि माता रजसला हो जाय तो शुद्धि के बाद मझल कार्य करे (१३१-१३२)। कोई कार्य प्रारम्भ हो और स्तक का लाशीच हो जावे तो इस कार्य के सम्पादन का विधान (१३४)। शाद्धकर्म उपस्थित होने पर निमन्त्रित ब्राह्मण आवें तो स्तक का भारतीय नहीं लगता व इस कार्य के सम्पादन का विधान (१३४)।

## देशान्तरपरिमापावर्णनम्

रहेश्व

श्राद्धां के भोजन करते हुए यदि सूतक हो जाय तो दूसरे के घर से जल लाकर आजमन करा देने से शुद्धि हो जाती है (१३७)। देशान्तर में यदि कोई सपिण्ड भर जाय तो सधः स्नान से शुद्धि कही गई है (१३८)। देशान्तर की परिभाषा ६० योजन दूर या २४ योजन अववा ३० योजन दूर को देशान्तर बताया है या बोली का अन्तर या पर्वत का व्यवधान तथा महानदी बीच में पढ़ जाती हो तो देशान्तर कहा जाता है (१३६-१४०)।



शुद्धाशुद्धिवर्णनम्

5880

थाशीच का विशेष रूप से. वर्णन-सूतक एवं मृतक आशौचका प्रारम्भ कब से भाना जाय इसका निर्णय। रजसका के मरने पर तीन रात के बाद शबधर्म का कार्य सम्पादन किया जाय । शुद्धाशुद्धि का वर्णन (१४१-१६३)। स्प्रष्टास्पृष्टि कहाँ नहीं होती इसका वर्णन (१६३)। दिन में कैथ की छावा में, रात्रि में दही एवं रामी के दुक्षों में सप्तमी में आंवड़े के पेड़ में अडक्मी सदा रहती है अतः वनका सेवन न करे (१६४)। शूर्य (सूप) की हवा, नख से जलबिन्दु का प्रहण केश एवं वस गिरे हुए बहेका जल और कूड़े के साथ बुहारी इनसे पूर्वकृत पुण्य का साश होता है (१६६)। जहाँ कहीं भी शुद्धि की आवश्यकता हो बहा-वहाँ तिलों से होम एवं गायत्री मन्त्र के जप से शुद्धि कही गई है (१६६)। दारुभ्यस्मृति के सुनाने का फल (१६७)।

।। वारुभ्यस्मृति की विषय-सूची समाप्त ।।

# आङ्गिरसस्मृति के प्रधान विषय

अध्याय

प्रधान विषय

प्रधास

### पूर्वाङ्गिरसम्

आङ्गिरसम्प्रति ऋषीणास्त्रक्षः---

२६४६

आहिरस से भृषियों का प्रश्न (१)। धर्म का खरूप वर्णन (२-४)। वैदिक कर्मों को पुराणोक्त मन्त्रों से न करे (१-६)। भन्त्र के अभाव में व्याहृतियों को काम में छिया जाय। व्याहृतियों का महत्व वर्णन (७-१४)। जात कर्मादि संस्कारों का अतिक्रम होने पर प्रायश्चित्त (१५-२१)।

श्राद्वापाकानन्तरमाञ्जीचे निर्णयः

2848

आहपाक के बाद यदि आशीच हो जाय तो विधान।
उस किया के करने में ऋतिक्गण को वह वाधक नहीं
हो सकता (२२-२४)। पाकारम्भ के बाद यदि
आस-पास में कोई मृत्यु हो तो आह द्षित नहीं होता
(२५)। पाकारम्भ से पूर्व भी यदि कोई मृत्यु हो तो
यह न करें (२६-२८)। इशे पूर्णमास इष्टि पशुबन्ध
के अनम्तर आहें (२६-३३)। महादीक्षा में आह
(३४-३६)। स्वर्वदीक्षा में आह (३६-३७)। दीक्षावृद्धि में आह (३०-४०)। दीक्षा के बीच में मृत्यु



होने से नहीं होता (४१-४३)। वैदिक कर्म का प्रावत्य (४४)। स्तिकाशीच एवं मृतकाशीच में वैदिक कर्म न करे, अस्पृश्यता आवश्यक है (४४-४८)। सतत आशीच होने पर श्राष्ट्र करने के छिये उस माम को छोड़ दूसरे माम में जाकर श्राद्ध करे (४६-६४)।

## शिखानिर्णयवर्णनम्

२६४४

रात्रु के द्वारा क्रिन्न शिखा हो जाने पर गी के पुच्छ के समान बाल रखकर प्राजापत्य व्रत कर संस्कार से शुद्धि कही गई है ( ५६-५७ )। मध्यच्छेद में भी बही बात है ( ६८ )। रोगादिसे नष्ट होने पर भी पूर्ववत् विधान है (५८-६०)। ५० वर्ष की अवस्था में शिखा म रहने पर आस-पास के बार्डों को शिखा के समान मान है (६१-६३)। पांच बार शत्रु से शिखा छेद होने पर बाद्माण्य नष्ट हो जाता है (ई४-६६)। सुतकादि से आद में विन्न होने से स्त्री संभोग होने पर गर्भ रहे तो ब्रह्महत्या व्रत का विधान (६६-६६)। व्रिशायक श्राद्धका वर्णन (७१-७६)। छाजहोम से पूर्व यदि वधूरजस्वका हो तो "इविष्मती" इस मन्त्र से सौ कुम्भों के विधान से स्नान कर वक्ष बदलने से शुद्धि ( ७७-८१ )। छाजहोम के बाद होने पर स्नान करा-

संस्वाय

भथान विषय

युष्ठाञ्च

कर अवशिष्ट निर्मन्त्रक विधि करे और शुद्ध होने पर धमन्त्रक विधि यथावत् करे (८२-८४)।

जीवासन अभी आरम्भ न हो और दूसरे दिन रजस्वला हो तो उसी प्रकार अमन्त्रक विधि एवं शुद्ध होने पर मन्त्रोबारण के साथ किया करे (८६-६३)। आशीच में निस्यनैभित्तिक कमी का बर्जन (६४-६६)। इनसे प्रेतकृत्य का नाश होता है अतः वर्जित हैं (६६-६७)। जत्यन्याय, जित्रोह और अतिकृत्ता कलि में भी वर्जित है। अति सकम और अतिशास्त्र भी वर्जित हैं (६८-१०३)।

जीवित्यक्त पिण्ड पितृ यक्त भाद्र का वर्णन (१०४-१०७)। पिता यदि सन्यास छ ले वो पातित्यादि द्वित होने पर उनके पितादि के आद का विधान (१०८-११७)। इसी प्रकार चाचा आदि की रित्रयों का (११८-१२०)। गीजमाता के आड का विधान (१२१-१२६)। आदा-धिकार और आदक्तां गीणपिता के लिये भाई का पुत्र सपत्नीक कृतकिय भी पुत्र सब्द्वा पाता है (१२६-१२६)। गोत्र नाम का अनुबन्ध व्यत्यास होने पर फिर कर्म करें (१३०-१३२)।

अनायप्रेतसंस्कारेऽक्यमेधफलवर्णनम् २६६३ कर्ता के दूर होने पर प्रेच्यत्व करे (१३३-१३४)।



सन्य से करने पर, वाक्सात्रदान करने पर आद्धमात्र होता है (१३६-१३८)। अन्न एवं पतितों का घट स्कोटन का अधिकार (१३६-१४०)। अनायभेत के संस्कार करने से अश्वसंघ यक्ष के समान फल प्राप्त होता है व भेट के संस्कार न करने में वोष (१४२-१४३)। विभ की आज्ञा से पतिकृत्य (१४४-१४७)। कर्ता के निकट होने पर अकर्त कृत को फिर करे (१४८)। असमोत्रों के संस्कार में आशौच (१४६)। माता-पिता के मृताह का परित्याग होने पर प्राथिक्त (१६०-१६१)। नदी स्नान से निष्कृति या संहिता पाठ से (१६२-१६६)। वेदमहिमा (१६७-१६६)। आक्षण का वेदाधिकार (१६०-१६३)।

स्तान का सब विधियों में प्राधान्य (१६४)। सम्पूर्ण कार्यों में स्तान हो मूल कारण बताया है (१६६-१६७)। अस्पूरय स्पर्शनादि कर्माङ्गस्तान (१६८-१७१)। बमन में स्तान (१७२)। बमन में स्तान न कर सके तो क्ष्य बढ़ल के (१७३-१७४)। शाकमूलादि के बमन में स्तान (१७५-१७६)। रात्रि में बमन में स्तान (१७७)। अपने गोन्न के छोड़ने पर अन्य गोन्न के स्वीकार करने का दोष (१७८-१७६)। अधौद्य, महोदय पर्व योग का विधान (१८०-१८३)। स्त्री के परयन्य के साथ चितारोहण होनेपर पुत्र का कृत्य (१८६-१६१)। श्वध्याय

प्रधान विषय

प्रशास

स्रीणां पुनर्विवाहे प्रायश्चित्तवर्णनम्

२१६१

आतिभेव से निष्कृति (१६२)। स्त्री के पुनर्विवाइ में बोच जैसे—



पुनर्विवाहिसा मूढै: पिएश्रान्मुक्षै: खडै:।

पदि सा तेऽखिछा: सर्वे स्युर्वे निर्यगामिन: ॥१६३॥

पुनर्विवाहिता सा तु महारौरवभागिनी!

तत्पति: पिएभि: सार्यं कालसूत्रगगो भवेत्।

दाता बाङ्गारशयननामकं प्रतिपद्यते ॥१६४॥

यदि मूर्ख एवं दुष्ट पिता व भाई आदि के द्वारा फिर श्री विवाहित की आय सो वे सथ नरकगामी होते हैं

थौर वह की महारौरव नरक में जाती है, व उसका विवाहित पति अपने पितरों के साथ कालसूत्र नामक नरक में गिरता है एवं देनेवाला अङ्गारशयन नामवाले नरक में जाता है। पुनर्विवाह के दोष निवारणार्थ प्राथश्वित का कथन (१६३-२०४)।

आन्ति से पुत्रिकादि विवाह होने पर चन्द्रायणादि करने से स्वमात्र की शुद्धि (२०६-२०७)। पुत्र होनेपर इत का विधान (२०८-२११)। एक, दो, तीन और चार-पांच बार विवाहिता होनेपर प्रायक्षित्त (२१२-२१७)। उससे तो वेश्या की विशेषता (२१८-२२४)। प्रविष्ठ प्रपति के काय हारा संयोग होनेपर प्रायश्चित्त (२२४-२२७)। अमाझ और माह्ममूर्ति का वर्णन (२२८-२२६)। अमाह्ममूर्ति का निवेद (२३०-२३८)। भगवत्प्रसाद महण में भक्षणविधि (२३६)। निवेदन-विधि (२४०)। अत्युष्ण निवेदन करने पर नरकगामी होता है (२४१-२४२)। निवेदन प्रकार (२४२-२४४)।

## गृहस्थस्य रात्रावुष्णोदकस्नानवर्णनम् २६७५

निवेदित का स्वीकार प्रकार ( २४६-२४७ )। निवेदित वस्तुवर्चों को दे (२४८)। गृहस्य द्वारा रात्रि में सर्म अल से सान (४४६-२६०)। अध्यक्त का विधान (२५१-२५३)। माच्याह्निक एवं क्षुर आतन का वर्णन (२५४-२५७)। प्रातः सायं पर्वादि में अभ्यव्जन सान (२६८-२६२)। सोद्कुम्भ मान्दी शाद्ध में अभ्यष्यम स्नान (२६३-२६६)। कोशस्थित नदी स्नान से आद्ध विधान (२६७)। सङ्कल्प (२६८-२७१)। पितु भाद के व्यत्यास में फिर करने का विधान (२७२)। शुन्यतिथि में करने से फिर करे (२७३-२७४)। पितृ शाद्ध के बाद कारुण्य साद्ध (२७४-२७६)। मासा-पिताका श्राद्ध एक दिन हो वो अन से करे (२०७-२७६)। चाकिक आद्ध (२८०-२८१)। प्रहण में भोजन निषेष दृद्ध वास और बातुरों को झोड़कर (२८२-२६१)। प्रधान विषय

र्शिक्ष

अत्यन्त आनुरों को भी छूट (२६२-१६७)। प्रस्तास्त शुद्ध होने पर सकामी व निष्कामीजन के लिये भोजन का विधान (२६८-३००)।

मातापित्रभ्यां पितुःदानं ग्रहणञ्च

3535

अग्निहोत्र वर्णन (३०१)। दसपुत्र वर्णन (३०२)।
माता-पिता द्वारा देने और छेने भा विधान (३०३-३१३)। पुत्र संप्रह अवश्य करना चाहिये (३१४-३१४)।
अपुत्र की कहीं गति नहीं (३१६)। पुत्रवान की महत्ता का वर्णन (३१७-३२३)। पुत्र उत्पन्न होनेपर उसका मुख देखना धर्म है (३२४-३२६)। यृत्तिदत्तादि पुत्रों का वर्णन (३२७-३३६)। समोत्रों में न मिले तो अन्य सजातियों में से पुत्र को छे अथवा सवर्ण में छे (३३६-३३७)। असगोत्र स्वीकृति में निषेध (३३८-३४२)। विवाह में दो गोत्रों को छोड़ने का विधान (३४३-३४४)। अभिवन्दनादि में दो गोत्र का वर्णन (३४१-३४४)। अभिवन्दनादि में दो गोत्र का विधान (३४१-३४४)। अभिवन्दनादि में दो गोत्र का विधान (३४१-३४४)। उत्तजादि का पूर्व गोत्र (३४२-३४८)।

**म्रातृपुत्रादिपरिव्रहवर्णन**म्

0539

भाता के पुत्र की होने में विवाह और होमादि की किया नहीं केवड वाणीमात्र से ही पुत्र संज्ञा कही है (३६६)। आसा के पुत्र का परिम्रह (३६०-३६३)। किसी पुत्र को छेने के लिये स्थीकृति होनेपर यदि औरस पुत्र हो तो दोनों को रक्ते नहीं पाप लगता है (३६४-३६७)। पुत्रदान के समय में को कहा गया हसे पूरा करना चाहिये (३६८-३७६)। भाई के पुत्र को लेने पर दिये हुए का समांश औरस गोत्र का चौथा हिस्सा (३७६-३८०)।

द्त्तक से औरस उपनीत न होनेपर प्रायक्षित (३८१-३८२)। भार्या पुरुष का पुत्र प्रहण (३८३-३८८)। इस समय की प्रतिक्का पूरी न करने से दोष (३८६-३६६)। सपक्षियों में पुत्र के प्रहण के समय जो रहे तो वह माता वूसरी सपक्षी माता (३६०-३६१)। अन्य मातामहादि का स्थान (३६१-३६५)। सपन्नी का पिता मातामह नहीं (३६६)। सपन्नी माता का तर्पण (३६६-३६८)।

औपासनाग्रौ श्राह्येऽप्रभादवर्णनम्

3335

सपत्नी माता का औपासन कि में आद (३६६)। पत्नी की कि पि (४००-४०१)। माई के पुत्र के महण की विधि (४०२-४११)। विभाग में भाई बरावर है (४१२-४१३)। कामज पुत्रों का वर्णन (४१४-४३३)। इत्तादि में निरोष (४३४-४४६)। पत्नी की वैशिष्ट्यता (४४६-४४६) पुत्रों का उथेष्ठ कानिष्ट्य (४६०)।

मोगिनी (४६१)। मर्मणा, वर वातादि पत्नियों का वर्णन (४६६-४६४)। धर्मपत्नी से छत्पन्न रिशु का ही स्पर्श मात्र कर्म त्व (४६६-४७१)। सिनिधि भी स्पर्शमात्र कर्म त्व (४७२-४७४)। आद्वादि में अस्यन्त तृप्तिकर पदार्थ (४७४-४८१)। गौरी दान बुधोत्सर्ग व पितरों को अत्यन्त तृप्ति कर कहे हैं (४८२-४८१)। जकारपत्मक का वर्णन (४८४-४८६)। प्रहण आद्व का लक्षण (४८६-४६६)। पनस स्थापित महान् विशेष हैं (४६६-५०३)। अलके आद्व (५०४-५०८)।

श्राद्वाहेदिव्यशाकवर्णनम् ३००३

शाद के योग दिन्य शाक (१०६-१३०)। पनस की महिमा (१३१-१७१)। रोदन का फल (१७२-१८१)। उर्वाद महिमा (१८६-६०३)। उर्वाद को छोड़ने में दोष (६०४-६०१)। छियानवे आर्द्धों का वर्णन (६०६-६१६)। १०८ आर्द्ध प्रकृति आर्द्ध, दर्श आर्द्ध, दर्श और आव्दिक समान हैं सन्वादि आर्द्ध, संकान्ति आर्द्ध, संकान्ति पुण्यवास (६२०-६४८)। अन आर्द्ध में कुतप (६४६-६५४)। दर्श संकान्ति आदि आर्द्ध (६५६-६५७)। महास्त्रय (६४७-६४६)। आद्ध देवता (६६०-६६४)। पित्र्य कर्मों में प्रदक्षिणा न करे। शून्य छळाट रहे गृहास्त्रहार मी न करे (६६४-६६७)। मातृष्यों में प्रदक्षिणादि य अलङ्कार (६६८-६७०)। आद्धभेद से विश्वेदेव, सापिण्ड वर्णन (६७१-६७६)। आशौच दरा, सीन और एक दिन रहता है (६७६-६८३)। अमादि आद में कर्तव्य (६८४-६८७)। एकोदिष्ट के अधिकारी (६८८-६६३)।

अपिण्डक और सपिण्डक आद्ध (६६०-६६३। छियानवे त्राद्धों की संख्या का विचार (६६४-७००)। महाळय, सकुत्महाळय में भरण्यादि की विशेषता महा-छय का काछ, यतियों का महाळय, दुर्ज तों का महाळय (१०१-७०६)। सुमझळी का आद्ध (७१०-७१६)। महाळय से दूसरे दिन सर्पण (७१७-७१८)। रिव के उद्य से पूर्व तर्पण (७१६)।

निमन्त्रणाईचित्राणां वर्णनव्

३०२५

जीवत्पत्तक आद्ध (७२०-७२२)। आद्ध में वैदिक अग्नि के अधिकारी (७२३-७२६)। अष्टकामासिक आद्ध (७२७-७३२)। आद्ध प्रयोग में निमन्त्रण के योग्य स्यक्तियों का वर्णन (७३३-७३६)। वेव्हीन को निमन्त्रण देने पर निषेध एवं प्रायक्षित (७३७-७४०)। अपने शासा के बाधाण की ही क्लाव्यता (७४१-७४२)। आह में अमोज्य (७४३-७६८)। वरण (७६६-७७४)। प्रसाद के लिये दर्मदान (७७४-७७६)। मण्डल पूजा (७७७-७७६)। गुल्मों के नीचे धोना (७८०-७८१)। आवमन कर्ता के पहले मोक्ता का आवमन देवादि के मोजन की दिशा वरणत्रयकाल, विष्टर, अर्घ्य, आवाहन गन्धाक्षतादि दान (७८२-८०१)। अमीकरण फिर सक्क्ष्य परिवेषण (८०२-८१७)।

## यरिवेषणे पौर्वापर्यवर्णनम्

३०३३

पौर्वापर्य में पहले सूप देना (८०८-८१४)। रक्षोध्र मन्त्र खिव असमर्थ हो तो दूसरे द्वारा बोला जाय (८१६-८१८)। गरम ही परोसना चाहिये (८१६-८१६)। मन्त्र बोले जाय मन्त्रों की विकलता नाश के लिये देद का घोष (८२६-८४८)। शास्त्र विरोधि-त्याक्य हैं (८४६-८६०)। तिलोदक पिण्डदान नमस्कार अर्चन, पुत्रकलतादि के साथ पित आदि की प्रदक्षिणा ब नमस्कार (८६१-८६८)। सध्यम पिण्ड का परि-मार्जन कर धर्मपत्नी का दे दे (८६६-८७२)। आद दिन में शुत्र भोजन निषिद्ध (८७३)। पिता के भोजन के पात्र गाइ दिये आयं (८७४)।



प्रधान विषय

विश्वास

## आद्धे निमन्त्रितनाक्षणपूजनवर्णनम्

3086

खर कुम्भ (८०६-८००)। प्रथम वर्ष तिस्न तर्पण न करे सिपण्डीकरण के बाद आद्वाङ्गतर्पण (८०८-८८२)। आद में निमन्त्रित ब्राह्मणों की पूजा का वर्णन (८८३-८६२)। पितरों के निमित्त रजत और देवता के निमित्त स्वर्ण मुद्रा दे। उपस्थान और अनुबसनादि का कथन (८६३-८६०)। कर्म के मध्य में झानाझानकृत दोष का प्राथितित्त (८६८-६०४)। उच्छिष्टादि आद्व में सात पवित्र (६०६-६०६)। उच्छिष्ट, निर्मालय, गङ्गामदिमा, महानदी, नदियों का रजस्वस्थात्व, पुष्यक्षेत्र (६१०-६४२)। वमन (६४३-६४६)। फिर आद्व प्रकरण (६४६-६६०)।

अनुमासिक में विष्णुष्ट वमनमें व उच्छिष्ट के विख्य स्पर्श में विचार (६५१-६५६)। एक दूसरे के स्पर्श में (६६०-६६४)। दशांदि में छीक आने पर विचार (६६४-६७३)। अपुत्र की असापिण्ड्यता (६७४-६७६)। पति के साथ अनुगमन में पत्नी का एक साथ ही पिण्डवान (६७६-६७८)। यत के ग्यारहवें दिन या दूसरे दिन सहगमन में बाद्ध (६८३-६८८)। यदि पत्नी ऋतुकास में हो पति के मरण पर तो पति को तैल की कड़ाही में छोड़ दे और शुद्ध होने पर ही और्ध्वदेहिक

काच्याय

प्रधान विषय

TELE

संस्कार करे (१८१-११६)। उसका पिण्ड संयोजन (१६६)।

अन्यगोत्रदत्तकपुत्रकृत्यवर्णनम्

8043

माता के सापिण्ड्य न होने का स्थल (१६७-६६८)।
इत्तपुत्र का पालक पिता का सापिण्ड्य होता है (१६६)।
इत्तपुत्र का जौरसपिता के प्रति कृत्य (१०००-१००६)।
अन्य गोत्र इत्त का सपिण्डीकरण में विधान (१००६-१००८)। कथाएपि (१०१६-१०२१)। आव्ध दिन में वर्ज्य (१०२२)। माद्ध के दिन दान जप न करे (१०२३-१०२७)। इर्श में मृताह के आव्ध को पहले करे (१०२८)। मृताह के दिन सातामहादि का आद्ध हो तो मन्वादिक आद्ध करे (१०२६-१०३१)।

मृताह में नित्यनैमित्तिक आ जाय तो नैमित्तिक पहले करे (१०३२-१०३४)। दर्श में बहुआद्ध हों तो इर्शादि को कर फिर कारुण्य आद्ध करे इसमें मत-मतान्तर (१०३६-१०४४)। किन्हीं का कल्प प्रकार (१०४६-१०६६)। श्रष्टिकया का विधान, पतित की प्रधीस वर्ष के बाद कियायें हों (१०६०-१०७२)। माद्धाङ्ग स्पण दूसरे दिन (१०७३-१०७५)। उद्देश्य स्थाग के समय सञ्यविकिर न करे (१०७६-१०७८)। वसन में करों के मोजन न करने पर अर्थ हिन, तिल



अभ्याय

प्रधान विषय

प्रशास

द्रोण का विधान, दर्शश्राद्ध तर्पण रूप से तिल ही मुख्य हैं। सभी कर्मों में जल की प्रधानता (२००६-२११३)। ॥ आहिरसस्पृति के पूर्वाङ्गिरसम् की विषय-सूची समाम।।

# आङ्गिरस (२) उत्तराङ्गिरसम्

१ धर्मपर्यत्रायश्चित्तानां वर्णनम्

३०६६

विधिः ( १-१० )।

२ परिषद उपस्थानलक्षणम्

२०६७

परिषद् के उपस्थान का स्रक्षण और उसके सामने निर्णय पूछने की विधि (१-१०)।

३ प्रायश्चित्तविधानम्

३०६८

सत्य की महिमा व किये गये कुकृत्यों के छिये सत्य बोडकर प्रायश्चित्त पृद्धने का विधान (१-११)।

४ परिषक्षक्षणवर्णनम्

3068

आयश्चित का लक्षण (१-२)। परिवन् का लक्षण और वसके मेद (११०)।

#### भ प्रायश्चित्तनियन्तृकथनम्

१००६

दशावरापरिपद् (१)। चतुर्वेद्य (२)। विकल्पी
(३)। अङ्गवित् (४)। धर्मपाठक (५)। अध्यमी
(६)। ब्राह्मणों की परिपद् आगे प्रायक्षित्त नियन्ताओं
का वर्णन बताया है (१-१४)।

## ६ प्रायश्चित्ताचारकथनम्

३०७२

प्रायक्षित के आचार का वर्णन (१-१५)।

#### ७ पापपरिगणनम्

₹003

जानते हुए भी प्रायश्चित्त का विधान पूछने पर ही करें (१-२)। पापपरिगणन (३-७)। पश्चमहापात- कियों का वर्णन (८-६)।

## ८ शुद्राचस्य गहिंतत्ववर्णनम्

३०७५

प्रतिप्रह में प्रायिधित्त (१)। श्रूप्राझ के भोजन में प्रायिधित्त (२)। श्रूप्र की प्रशंसा कर स्वस्तिवाचन में प्रायिधित्त (३-५)। प्रतिप्रह लेकर दूसरों को दे दे (६)। श्रूप्राझरस से पुष्ट वेदाध्यायी का प्रायिधित्त (७)। श्रूप्राझ है माम तक खाने से श्रूप्र के समान हो जाता है एवं मरने पर कुत्ता होता है (८)। सारी छस्न खानेवाले को भी श्रूप्र ही होना पड़ता है (६)। प्रति-

अध्याय

प्रधान विषय

वृष्टा श्रु

प्रहक्षेत्रोग्यधान्य (१०-११)। पात्र से हेना चाहिये प्रतिप्राह्म वस्तुर्थे (१२२०)।

### **६ अमस्यमक्षणप्रायश्चित्तम्**

*७७*० इ

अभक्ष्यभक्षण का प्रायश्चित्त (१-८)। भिक्षुकों की गणना (६-१०)। कुले से काटे हुए का प्रायश्चित्त (११-१६)।

## १० हिंसाप्रायश्चित्तकथनम्

300 €

हिंसा का प्रायश्चित्त वर्णन (१)। दण्ड का छक्षण (२)। गौओं के प्रहार करने से प्रायश्चित्त (३)। गायों के रोधनादि से मरने पर प्रायश्चित्त (४-५)। गायों की हुई। आदि मारने से दूदने पर प्रायश्चित्त (६-१०)। किन-किन अधस्थाओं में प्रायश्चित्त नहीं छगता उसका परिगणन (११-१४)। गजादि प्राणियों की हिंसा में प्रायश्चित्त (१४-१६)। काम और कामादिकृत पायों के प्रायश्चित्त के छिये विशेष वर्णन (१६-१६)। बालक इद्ध और क्षियों के लिये प्राय-रिक्तविधि (२०-२१)।

## ११ गोवधप्रायश्चित्तकथनम्

३०८१

गोवध करनेवाले का प्रायश्चित वर्णन (१-११)।

अध्याय

प्रधान विषय

व्याष्ट्र

१२ कुच्छादिस्वरूपकथनम्

३०८३

प्रायश्चित्तविधि (१-४)। कृष्ट्रादि का स्वरूप कथन (५-८)। ब्राह्मण महिमा—

समस्तरम्पत्समवाप्तिहेतवः समुध्यितापत्कुलधूमकेतवः। अपारसंसारसमुद्रसेतवः पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः॥ (१-१६)।

आद्गिरस (२) के उत्तराङ्गिरस प्रकरण की विषय-सूची समाप्त ।

## भारद्वाजरमृति के प्रधान विषय

१ भारद्वाजम्प्रति सन्ध्यादिप्रमुखकर्मविषये भृग्वादिमुनीनां प्रश्नः

₹०८५

भारद्वाज मुनि से भृगु, ध्विन, वशिष्ठ, शाण्डिल्य, शोहित आदि महर्षियों ने नित्यनीमित्तिक कियाओं को डेकर प्रश्न किया (१-७)। उन्होंने बतलाया कि नित्या-मुष्ठानों के न करनेवालों की सभी कियायें निष्फल होती है। दिशाओं के निर्णय से लेकर प्रायश्चित्त तक २५ अध्यायों का संक्षेप से निरूपण (८-२०)।

### २ दिग्मेदज्ञानवर्णनम्

**७००**६

पूर्व,पश्चिम, उत्तर एवं दक्षिण दिशाओं के ज्ञान की सरस्रविधि (१-४)। अन्य दिशाओं का परिज्ञान प्रकार (१-७७)।

# ३ विण्मृत्रोत्सर्जनविधिवर्णनम्

8305

मलमूत्र विसर्जन की विधि (१-८)।

### ४ आचमनविधिवर्णनम्

20€9

आचमन के पूर्व जङ्घा से जानु तक या दोनों चरणों को और हाथों को अच्छी प्रकार धोकर आचमन का विधान (१-५)। जल में खड़ा हुआ जल में ही आच-मन करे, जल के बाहर हो तो बाहर (६-७)। अंग-न्यास, देवताओं का स्मरण, आचमन कितना लेना चाहिये, बिना आचमन के कोई कमें कल नहीं देता कतः इसका बराबर ध्यान रक्खा जाय (८-४१)।

## ५-दन्तधावनविधिवर्णनम्

8008

मुख शुद्धि के लिये दन्तधावन का विस्तार से निरूपण, दन्तधावन के लिये वर्ज्य तिथियां एवं समय तथा कौन-कौन काष्ठ माझ हैं तथा कौन-२ अमाझ हैं इसका निरू-पण, मौन होकर दन्तधावन करे (१-२५)। स्नानविधि अध्याय

प्रधान विषय

व्रमाङ्क

का वर्णन (२६-३८)। छलाट में तिछक का विभान (४०-४१)।

६ त्रिकालसंध्याविधानकथनम्

8008

एक ही सन्ध्या के कालभेद से तीन खरूप—प्रथम काल की बाह्मी दूसरे की (मन्याह की) वैष्णवी तीसरे की रीद्री सन्ध्या कही गई है। यही ऋक्, यज्ञु और सामवेदों के तीन रूप है। इनके नित्य ही दिजमात्र की कर्तव्य इष्ट हैं। सन्ध्या की मुख्य कियाओं का विस्तार से परिगणन (१-६८)। गायत्री के जपविधान का कथन (६६-१४०)। गायत्री का निर्वचन (१४१-१६३)। जप यहा की महिमा (१६४-१८१)।

७ जपमालाया विधानकयनस्

8028

जपमाला का विधान और जपमाला की प्रतिष्ठा विधि। जप विधान में अर्थ का प्राधान्य और साथ में मनोयोग पूर्वक करने से ही इष्टसिद्धि मिलती है (१-१२३)।

८ जपे निषिद्धकर्मवर्णनम्

3036

जप में निषिद्ध कर्मी का वर्णन (१-१२)।

ह गायज्याःसाधनकमवर्णनम् ४०३८ गायत्री के साधनकम को जानने से ही सद्यः सिद्धि मिलती है अतः उसको जानकर जप किया जाय (१-५०)।

अध	41	य

प्रधान विषय

प्रशाह

- १० गायच्या मन्त्रार्थकथनम् ४०४३ गायत्री के मन्त्र का अर्घ का विस्तार से निरूपण (१-६)।
- ११ गायत्र्याः पूजाविधानकथनम् ४०४४ गायत्री का पूजा विधान (१-११८)। गायत्री पुष्पाञ्जलि का प्रकार (१११-१२१)।
- १२ गायत्रीध्यानवर्णनम् ४०५६ गायत्री का ध्यान वर्णन (१-६१)।
- १३ गायत्रीमूलध्यानवर्णनम् ४०६३ गायत्री का मूलध्यान और महाध्यान का वर्णन (१-४४)।
- १४ पूजाफलसिद्ध्ये द्रव्यगन्धलक्षणवर्णनम् ४०६६ पूजाफल की सिद्धि के लिये नामा द्रव्यः, गन्धलक्षण का विस्तार से निरूपण (१-६४)।

## १५ यज्ञोपवीतविधिवर्णनम् ४०७२

यद्वीपवीत की विधि का वर्णन—निवीत और प्राचीनावीत का लक्षण। शुद्ध देश में कपास का बीज वोया जावे, उसके तैयार होनेपर ही ब्रह्मसूत्र को विधिवत् वनाया जाय। नाभि के बराबर ६६ छियानवे चार हसाङ्गुल प्रमाण से बनाकर शुद्ध मन से देवगण ऋषियों का ध्यान करते हुए इस ब्रह्मसूत्र को पहने (१-१५४)। प्रधान विषय

व्रमाङ

## १६ यज्ञोपचीतधारणविधिवर्णनम्

8550

शुद्ध होकर आचमन कर आसन पर वैठे किर आचार्य, गणनाथ, बाणीदेवता, देवता, ऋषिगण और पितरों का स्मरण करे। भगवान, ब्रह्मा, अच्युत और क्रम को भक्ति से नमस्कार करे, नवीं तन्तुओं में आचा-हन कर यह्नोपवीत का धारण करे (१-६३)।

१७ यद्गोपवीतमन्त्रस्य ऋषिच्छन्द आदीनां वर्णनम् ४१६३ यक्गोपवीत मन्त्र के ऋषि छन्द देवता आदि का विस्तार से वर्णन (१-३१)।

## १८ सप्रयोजनकुशलक्षणवर्णनम्

888€

कुशों के विना कोई भी नित्यनैमित्तिक किया का सम्पादन शक्य नहीं अतः कौन सी माह्य है और कौन सी अम्राह्य है इसका निरूपण (१-१३१)।

## १६ व्याहृतिकल्पवर्णनम्

3058

ज्याद्वतियों का विस्तार से निरूपण (१-४८)। ज्याद्वतियों से सम्पूर्ण कार्यसिद्धि शक्य है (४६)। ॥ भारद्वाजस्मृति की विषय-सूची समाप्त॥